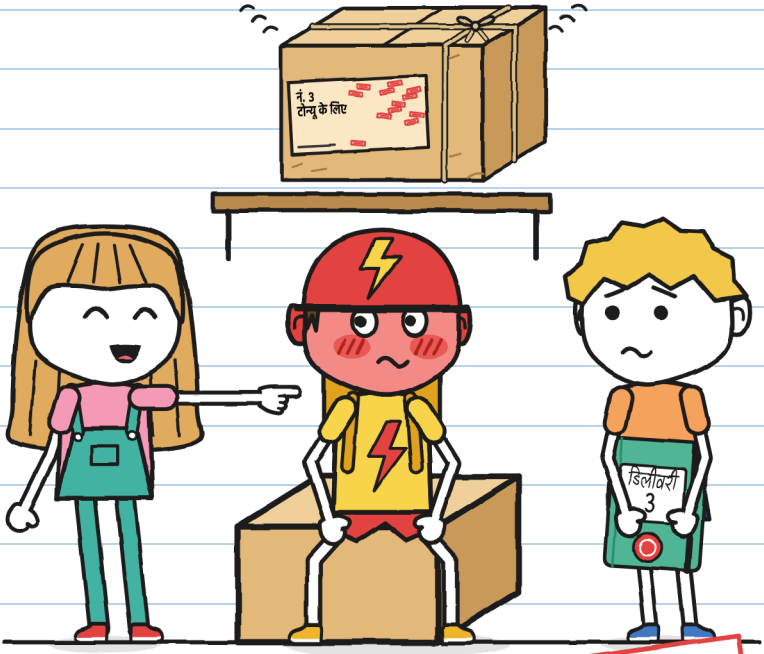
नामुमकिन डिलीवरी · 3

वापस भेजिए, प्लीज़

LinguAula



(मुनी की डायरी)

साइलेंस S
शुरुआती स्तर · 7+

नामुमकिन डिलीवरी · 3
वापस भेजिए, प्लीज़

लेखन और चित्र: LinguAula

साइज़ S · शुरुआती स्तर · 7+

हिन्दी संस्करण: LinguAula

पहला संस्करण: 2026

© 2026 LinguAula · info@linguaula.com

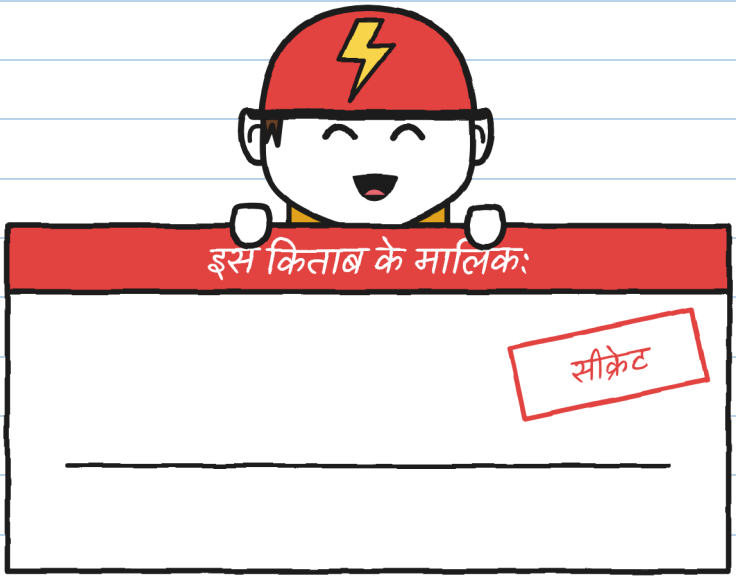
कक्षा और घर के लिए खुलकर फ़ोटोकॉपी कर सकते हैं।

सीरीज़ की तीसरी किताब। पिछली दो: "यह पार्सल काटता है" और "बादल गरजने से पहले न खोलें"।

LinguAula

हर अध्याय का अभ्यास linguaula.com पर करो

इस किताब को लिखते समय किसी डिलीवरी वाले को चोट नहीं लगी। हाँ, लाल जूरूर हुआ। —ज.



और उसे पहले मैं पढ़ती हूँ। –ज.

अगर यह तुम्हें मिल जाए, तो लौटा देना। प्लीज़।

सिर्फ़ कहानी में

यह मुहर बताती है कि सिर्फ़ कहानी में क्या होता है। असली पार्सल उड़कर वापस नहीं आता। असली साइकिल हो, तो पेज 76 देखो। –ज.

कौन कौन है



गुनी। शनिवार का डिलीवरी बॉय। ऐसी चीज़ों के चित्र बनाता है जो किसी ने माँगी नहीं। यह डायरी उसी की है।



ज़ूलिता। हरे रंग से लिखती है और "ज़." से दस्तख़त करती है। उसे हमेशा पता होता है कि मदद कैसे करनी है। यही तो समस्या है।



टोन्यो। साइकिल पर "बिजली" के लिए डिलीवरी करता है। दस मिनट में या मुफ़्त। हिस्सों में लाल होता है।



माशा। नामुमकिन डिलीवरी की मालकिन। जादूगरनी वाली टोपी पहनती है। जितना बताती है, उससे ज़्यादा जानती है।



ज़ोई। "बिजली" वाली। सबसे तेज़। सबके निकनेम वही रखती है।



ब्रूनो। "बिजली" वाला। एक बार पंक्चर हुआ था। दो साल पहले।



पार्सल नं. 3। हिलाओ तो बजता है। लेबल पर बस एक नाम लिखा है।

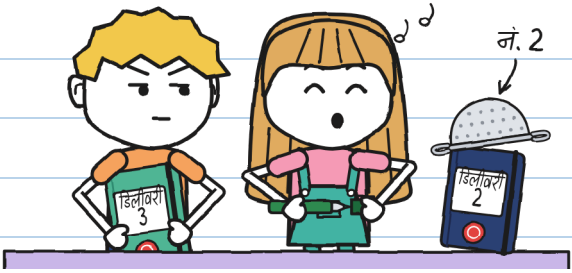


R. की तरफ़ से वे पार्सल भेजे जाते हैं जिन्हें कोई नहीं पहुँचा पाता। कोई उसका नाम नहीं लेता।

डिलीवरी डायरी 3
गुनी की

सीक्रेट।

"सीक्रेट" का मतलब: इसे पहले मैं पढ़ती हूँ। और किसी को बताती नहीं। –ज.



डायरी नंबर 2 एक ही तूफ़ान में ख़त्म हो गई। यह हरी है और इस पर दुकान की मुहर है। इसे पहले मुझे इस्तेमाल करना था। किया जूलिता ने।

पहले मैंने लिखा, तुम्हारी मदद को। शुक्रिया नहीं। –ज.

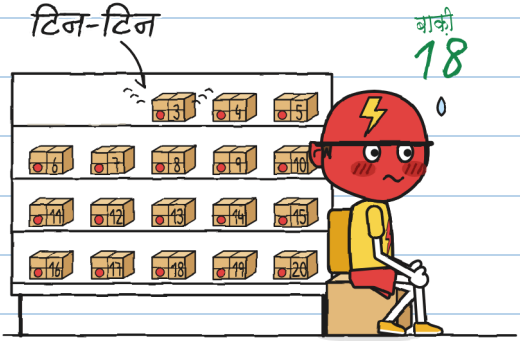
मैंने मदद नहीं माँगी थी। जूलिता को क्या फ़र्क़।

अध्याय 1

टिन-टिन

मारा दुकान में वे पार्सल रखती हैं जिन्हें कोई नहीं पहुँचा पाया। एक शेल्फ़ पर। वे बीस थे। जूलिता और मैंने दो पहुँचा दिए: ड्रैगन का एक अंडा और कुछ भागते हुए बीज। बाक़ी अठारह हैं।

तूफ़ान की रात हम घर जा रहे थे। एक पार्सल बज उठा। टिन-टिन।



वह नं. 3 था। टोन्यो "बिजली" के लिए दस मिनट में या मुफ़्त डिलीवरी करता है। वह अपने हेलमेट के रंग जैसा लाल हो गया।

बिना दस्तख़त के, वापस आए पार्सल सुबह होते ही उड़कर अपने शेल्फ़ पर लौट आते हैं। सिर्फ़ उसके दस्तख़त चलते हैं जिसे पार्सल मिला है। लेबल पर। कभी न मिटने वाली स्याही से। R. प्रेषक है: वही उन्हें भेजता है।

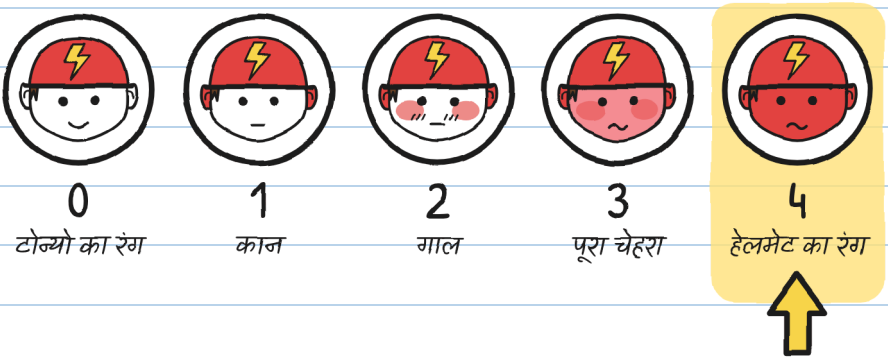


जूलिता लेबल पढ़ने लगी:
"टो..."
उसने मुँह बंद कर लिया। वह कभी शब्द के बीच में चुप नहीं होती। मैंने टोन्यो को देखा। वह लाल हो रहा था।

मैंने आधा शब्द पढ़ा। बाक़ी आधा निगल गई। –ज.

कुछ लोग अचानक लाल हो जाते हैं। टोन्यो नहीं। वह हिस्सों में लाल होता है। मैंने इसे लिख लिया।

टोन्यो का लाल-मीटर



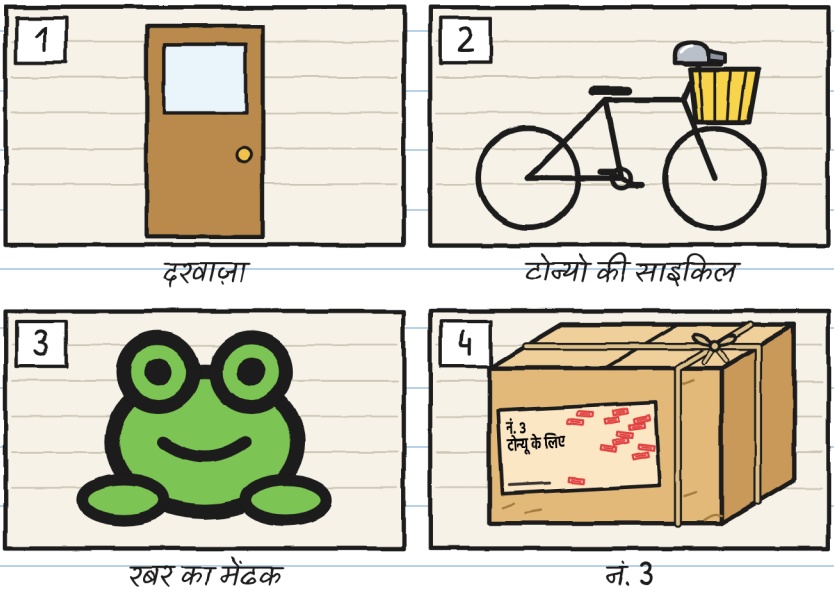
"वह पार्सल इंतज़ार कर सकता है," टोन्यो ने जल्दी से कहा।
"सालों से इंतज़ार कर रहा है। एक दिन और। या दस।
'बिजली' को कोई जल्दी नहीं है।"
"बिजली" के किसी इंसान ने पहली बार ऐसा कहा था।

उस रात: 4। मैं इसे लाल रंग से लिखना चाहती थी। मेरे पास सिर्फ़ हरा है। –ज.

"आज रात कुछ नहीं खुलेगा," मारा ने कहा। "और शेल्फ़ को बिना इजाज़त कोई नहीं छुएगा।"
किसी ने उसे नहीं छुआ। टिन-टिन फिर बजा।
टिन-टिन।
"वह दरवाज़ा था!" जूलिता ने कहा।

जब मुझे कुछ समझ नहीं आता, मैं एक लिस्ट बनाता हूँ।

टिन-टिन के संदिग्ध



दरवाज़ा

टोन्यो की साइकिल

रबर का मेंढक

नं. 3

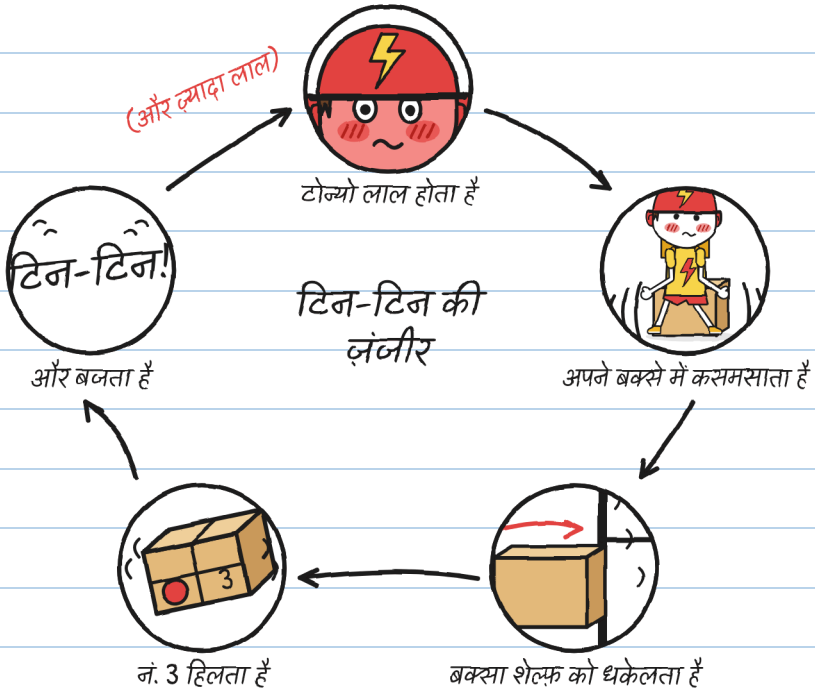
मेंढक बेक़सूर है। मैं उसे जानती हूँ। –ज.

मैं आवाज़ें आज़माने फ़ुटपाथ पर गया। बारिश रुक चुकी थी। मैंने दरवाज़ा खोला और बंद किया: चर्र्र। साइकिल की बेल बजाई: ट्रिंग! मैंने मेंढक दबाया: पीं।



जूलिता उँगली हिलाकर मना कर रही थी। कोई आवाज़ वैसी नहीं थी।
मैं अंदर गया। टोन्यो अपने बक्से में बैठा-बैठा हिला।
टिन-टिन।

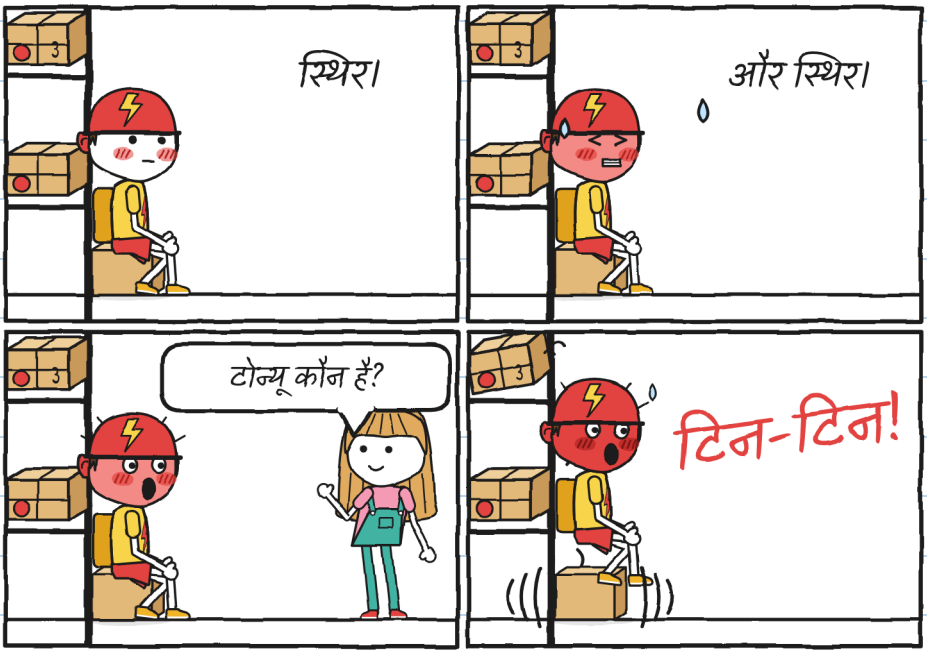
मैं झुका। टोन्यो का बक्सा शेल्फ़ के पाये को छू रहा था।



जादू नहीं था। टोन्यो था।
पार्सल हिलाने पर नं. 3 के अंदर कुछ बजता है।

मेरी तरह। –ज.

टोन्यो ने बिना हिले-डुले बैठे रहने का फ़ैसला किया। वह इतनी देर चला:

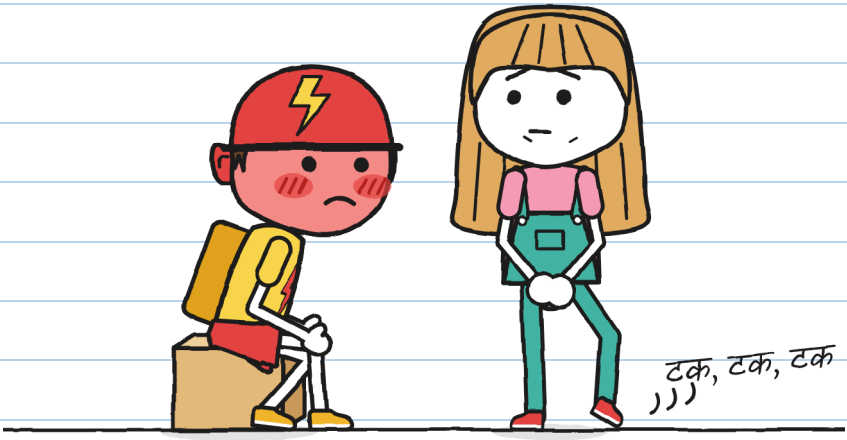


यह तो बस एक सवाल था। सवाल शेल्फ़ को धक्का नहीं देते। –ज.

यह वाला देता है।

“वह मैं था,” टोन्यो ने अपने जूतों को देखते हुए कहा। “जब मैं छोटा था।”
उसने बहुत धीरे से कहा। मेंढक ने मुझसे अच्छा सुना।

जूलिता ने मुँह खोला। उसके पास बहुत सवाल थे। टोन्यो अब भी अपने जूतों को देख रहा था। जूलिता ने उसे देखा और मुँह बंद कर लिया।



“मैं और नहीं पूछ रही,” जूलिता ने कहा।
उसे मुश्किल हुई। उसका पैर हिल रहा था।

सवाल जो मैंने नहीं पूछे: नौ। मैंने उन्हें लिख रखा है। –ज.

"आप इसे उसके पास आज तक क्यों नहीं ले गईं?" मैंने मारा से पूछा।
"बारह बार ले गई हूँ। लेबल देखो: न सड़क, न मकान नंबर, न सरनेम। जितने टोन्यू मिले, सबके यहाँ कोशिश की।"

मारा के टोन्यू



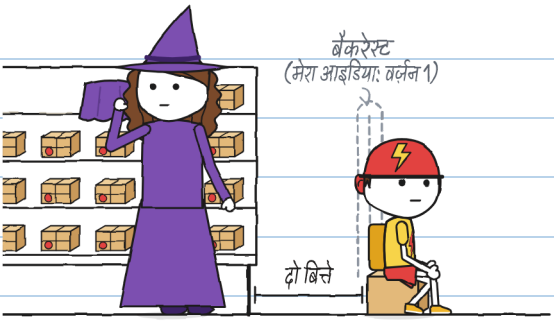
1. एक कैनरी।
(लेबल पर पैर रख दिया। नहीं चलेगा।)

2. दादा अंतोनियो, 71 साल।
("काश मैं होता।")

3. नहर की एक नाव।
(उसके हाथ नहीं हैं।)

"और टोन्यो?" जूलिता ने पूछा।
"पिछली बार मैं टोन्यो को जानती नहीं थी," मारा ने उसे देखते हुए कहा। "किसी ने मुझे बचपन का उसका नाम नहीं बताया।"

मारा ने काउंटर के नीचे से एक बैंगनी कपड़ा निकाला। उन्होंने नं. 3 को ढक दिया। जैसे सोने के समय तोते का पिंजरा। उन्होंने टोन्यो का बक्सा शेल्फ़ से दो बित्ते दूर कर दिया।
"ऐसे। अब तुम हिल सकते हो।"



टोन्यो साइकिल से जा सकता था। साइकिल दरवाज़े पर थी। दस मिनट में वह पूरा मोहल्ला पार कर सकता था।
वह फिर बैठ गया।
पता नहीं क्यों। फिर भी लिख रहा हूँ। उसके बक्से में पीठ टिकाने के लिए बैंकरेस्ट नहीं है। मैंने उसके लिए एक बना दिया।

तुमसे किसी ने बैकरेस्ट नहीं माँगा था। –ज.

दुकान बंद करते समय टोन्यो सबसे आख़िर में था। वह अपने हेलमेट का पट्टा कस रहा था।
"मारा। कल मैं पार्सल के बारे में बात करने आऊँगा। अकेले में।"
"ये दोनों दुकान के हैं।"
टोन्यो ने हमें देखा।
"ये दोनों ठीक हैं। पर 'बिजली' का कोई नहीं।"



पार्सल टोन्यो के लिए था। अब यह जानना बाक़ी था कि वह उसे चाहता है या नहीं।

उसकी मदद कैसे करनी है, यह मुझे पहले से पता है। –ज.

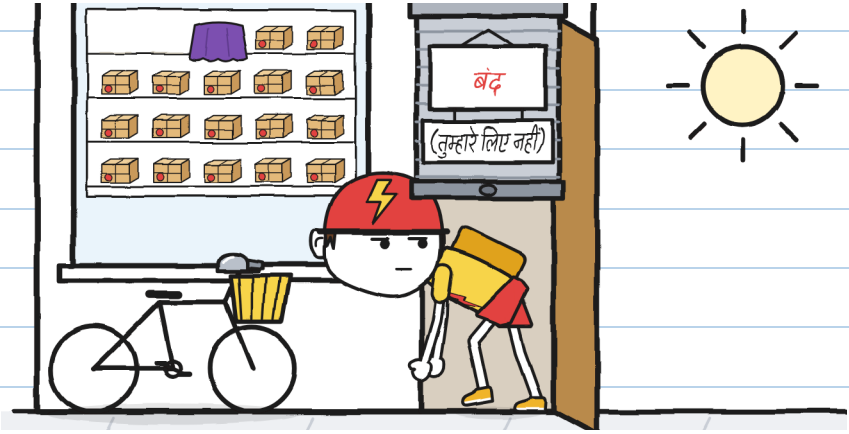
मुझे इसी बात की चिंता है।

अध्याय 2

मैंने हाँ नहीं कहा

रविवार को दुकान बंद रहती है। मारा ने शटर आधा ऊपर छोड़ा। उन्होंने एक तख़्ती लटका दी: बंद (तुम्हारे लिए नहीं)।

टोन्यो ग्यारह बजे आया। अंदर आने से पहले उसने सड़क के दोनों तरफ़ देखा। जैसे सड़क पार करने से पहले देखते हैं। "बिजली" का कोई नहीं आ रहा था।



हम साढ़े दस बजे पहुँच गए थे। कहीं ज़रूरत पड़ जाए तो। –ज.

मारा ने नं. 3 काउंटर पर रखा। उन्होंने कपड़ा हटाया। वे ऐसे बोलीं जैसे कोई तख़्ती पढ़ रही हों:
"पार्सल नंबर तीन। टोन्यू के लिए। क्या वह तुम हो?"
"था।"
"मेरे लिए इतना काफ़ी है। क्या तुम इसे लेना चाहते हो?"

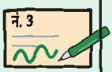
टोन्यो ने डिब्बे को देखा। डिब्बे ने कुछ नहीं कहा।
"मैंने हाँ नहीं कहा।"
"ना भी तो नहीं कहा।"
"मैंने कहा: 'मैंने हाँ नहीं कहा।'"



दस्तख़त न करने के लिए तीन वाक्य। मैंने गिने हैं। –ज.

टोन्यो ने डिब्बा गर्म पतीले की तरह पकड़ा। उसने उसे तौला। घुमाया। अपने कान के पास रखा। थोड़ा हिलाया। टिन-टिन।
उसने उसे झट से छोड़ दिया।

"अगर वह पार्सल ले जाए तो?" जूलिता ने कहा। "टोन्यो के घर में एक रात, और वह पहुँचा हुआ। यह तो तर्क की बात है।"
"वापसी की मुहर तर्क से नहीं चलती," माशा ने कहा। "वह स्याही से चलती है।"

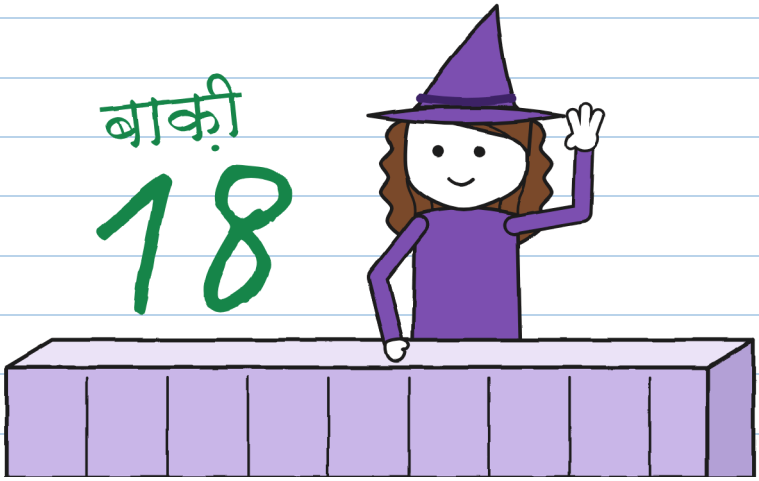
क्या यह डिलीवरी मानी जाएगी?		
	उसे देखना	नहीं
	उसे पकड़ना	नहीं
	उसे घर ले जाना	नहीं
	लेबल पर कभी न मिटने वाली स्याही से दस्तख़त करना	हाँ

मुहर और मैं एक तरह से नहीं सोचते। –ज.

"जूलिता, गुनीः यह डिलीवरी तुम्हारी है," मारा ने कहा।
"गरज वाली डिलीवरी की तरह। तीन शर्तें।"
उन्होंने उन्हें उँगलियों पर गिनायाः

1. *तुम डिब्बा नहीं खोलते। लेबल चिपका रहता है।*
2. *नं. 3 दुकान से तभी बाहर जाएगा जब टोन्यो कहेगा।*
3. *पाने वाला चाहे तो दस्तख़त करे। बिना दस्तख़त के, पार्सल सुबह होते ही लौट आता है। कुछ नहीं होता।*

"और अगर वह कभी न माँगे?" जूलिता ने पूछा।
"तो कभी नहीं।"



"कभी नहीं" डिलीवरी की तारीख़ नहीं होती। –ज.

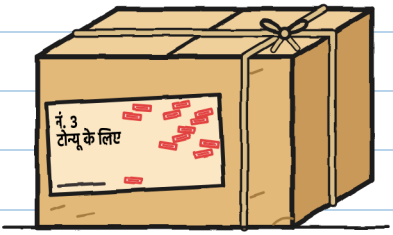
टोन्यो बहुत देर चुप रहा। जूलिता ने समय नापा: चार मिनट। "बिजली" के हिसाब से लगभग आधी डिलीवरी।

"मैं इसे ले जाता हूँ," टोन्यो ने कहा। "बंद ही। सोचने के लिए। फ़िलहाल।"
"माँग तुम रहे हो?" मारा ने पूछा।
"माँग मैं रहा हूँ।"

मैंने लिख लिया कि नं. 3 कैसे गया। ताकि कोई मना न कर सके:

रवानगी की पर्ची

- [x] डिब्बा: बंद
- [x] लेबल: चिपका हुआ
- [x] माँगने वाला: टोन्यो
- [ ] दस्तख़त: अभी नहीं



बाहर टोन्यो ने नं. 3 अपनी साइकिल की टोकरी में रखा। उसने उसे छोड़ा। वह बजा: टिन-टिन।

उसने हैंडल को और "बिजली" की बेल को देखा। जैसे उसे कुछ याद आ गया हो।
"क्या?" जूलिता ने पूछा।
"कुछ नहीं।"
टोन्यो साइकिल को हाथ से पकड़े पैदल चला गया। वह कभी पैदल नहीं चलता।



"कुछ नहीं" असल में "कुछ" था। उसकी मदद करनी पड़ेगी। –ज.

दरवाज़े से मैंने नुक्कड़ पर "बिजली" की दो साइकिलें खड़ी देखीं।
"टोन्यो! टोकरी में क्या ले जा रहे हो?" एक लड़की चिल्लाई। उसकी चोटी कमर तक थी।
"एक डिलीवरी।"
"किसके लिए?"
"एक ग्राहक के लिए।"

उसने झूठ नहीं बोला। जवाब देने से पहले उसने डिब्बा घुमा दिया। लेबल उसकी तरफ़ था। "बिजली" वाले उसे नहीं देख सकते थे।



अब समझ आया कि "बिजली का कोई नहीं" का क्या मतलब था। –ज.

उस रात मैंने अपने कमरे की खिड़की का परदा ऊपर छोड़ दिया। मेरा घर दुकान के सामने है। मैं देखना चाहता था कि नं. 3 लौटता है या नहीं।

"गुनी?" मम्मी ने गलियारे से कहा। "जाग क्यों रहे हो?"
"एक पार्सल की निगरानी कर रहा हूँ।"
"अच्छा। पर निगरानी पजामा पहनकर करना।"



मैं भी निगरानी करना चाहती थी। मेरी खिड़की से आँगन दिखता है। –ज.

सुबह होते ही नं. 3 सुनाई दिया।
टिन-टिन, टिन-टिन, टिन-टिन।
फिर वह छतों के ऊपर दिखा। बिना जल्दी के। वह आइसक्रीम वाली गाड़ी की तरह बज रहा था। तीन खिड़कियों में बत्ती जली। एक कुत्ता भौंका। नं. 3 दरवाज़े के ऊपर वाली छोटी खिड़की से अंदर आ गया। मारा उसे इसी काम के लिए खुला रखती हैं।

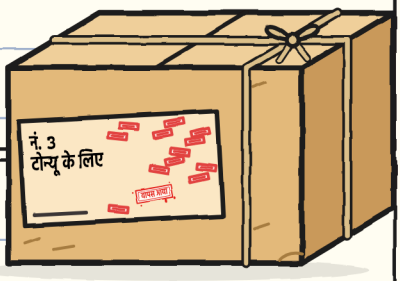


स्कूल के बाद हम दुकान गए। नं. 3 अपने शेल्फ़ पर था, अपनी जगह। उस पर एक मुहर और थी: तेरह।

नं. 3 की वापसियाँ

नं. 13 सोमवार, सुबह होते ही बजता हुआ

हम सबने सुना: मेरी मम्मी, आधा मोहल्ला, ५ नंबर वाला कुत्ता और मैं



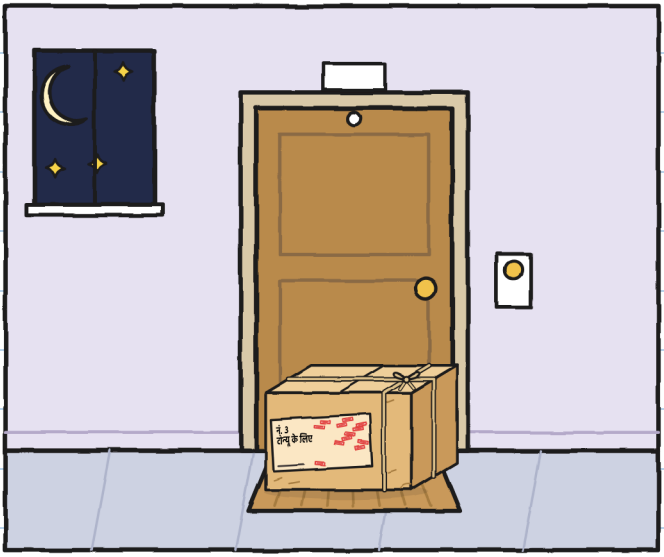
"यह सज़ा नहीं है," माशा ने कहा। "यह नियम है। किसी ने दस्तख़त नहीं किए: वह लौट आता है।"

तेरह मुहरें। और लगीं तो डिब्बा दिखेगा ही नहीं। –ज.

टोन्यो पाँच बजकर बीस मिनट पर आया, डिलीवरी के बाद। उसने नं. 3 के बारे में नहीं पूछा। उस सुबह उसने उसे अपने घर के ऊपर से गुज़रते सुना था।

यह मैंने नहीं देखा। टोन्यो ने मुझे बताया:

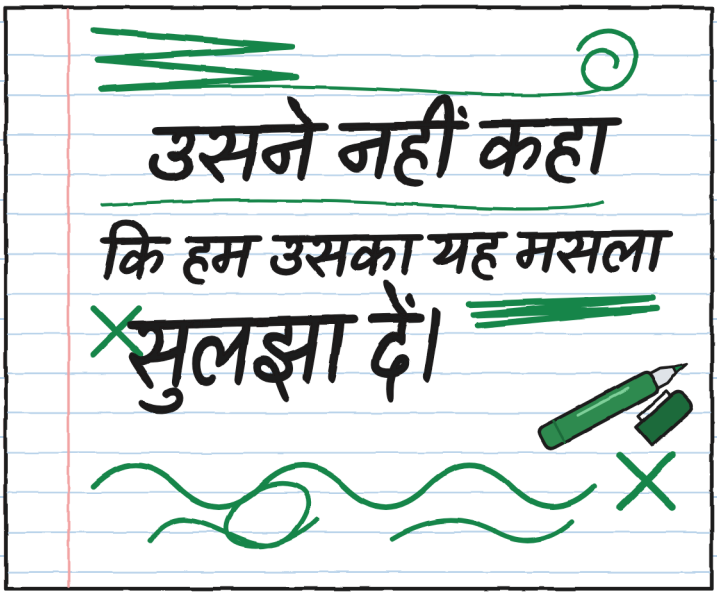
टोन्यो ने मुझे क्या बताया



"मैंने डिब्बा सारी रात दरवाज़े के पायदान पर छोड़ दिया था।"
"तुमने उसे अंदर क्यों नहीं रखा?" जूलिता ने पूछा।
"घर में बहुत लोग मुझे पहले से टोन्यू कहते हैं।"

"एक दस्तख़त से सब ठीक हो जाता," टोन्यो के जाने के बाद जूलिता ने कहा। "बस एक। दो सेकंड लगते हैं। मैंने अपने दस्तख़त से समय नापा।"

मैंने डायरी खोली। "हरा रंग मेरा वाक्य नहीं ढकेगा," मैंने सोचा। मैंने बॉलपेन से दबाकर लिखा:



मैंने पढ़ लिया। मैं सहमत नहीं हूँ। फ़िलहाल। –ज.

मेरे पास एक और आइडिया है। मुझे ऐसे मत देखो। –ज.

अध्याय 3

ऑटोग्राफ़

मंगलवार को मैं स्कूल से निकला। दुकान के फ़ुटपाथ पर एक मेज़ थी। उस पर पीला मेज़पोश था, ज़मीन तक। जूलिता की लिखावट वाला एक पोस्टर था। और बीच में कुछ ढका हुआ था।



"यह स्टैंड है। आराम से दस्तख़त करने का सहारा," जूलिता ने कहा। "मैं ऑटोग्राफ़ इकट्ठा करती हूँ: यादगार दस्तख़त।"
"कब से?"
"कल से।"

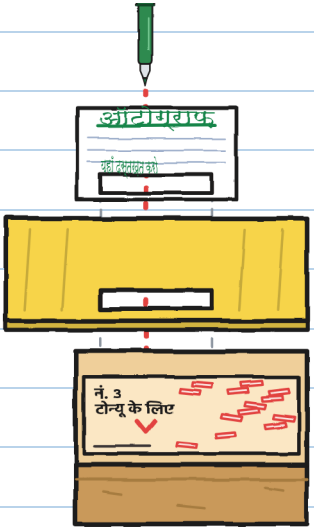
स्टैंड पर लाइनों वाली एक शीट थी। नीचे कैंची से कटी एक छोटी खिड़की थी। मेज़पोश में ठीक उसके नीचे वैसी ही एक और थी।

मैंने मेज़पोश का एक कोना उठाया। स्टैंड नं. 3 ही था, लिटाया हुआ। छोटी खिड़कियों से उसका लेबल ऊपर की तरफ़ दिख रहा था।

यह कैसे चलता है

1. शीट, अपनी छोटी खिड़की वाली।

2. मेज़पोश, अपने छेद वाला।



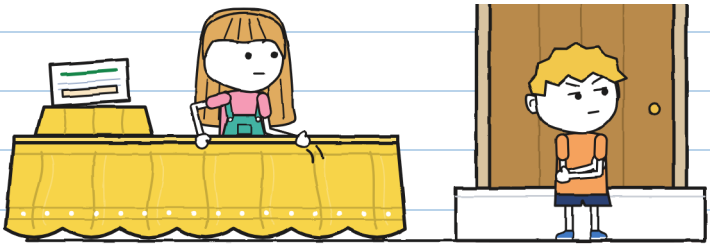
3. नं. 3 का लेबल, उसका ख़ाली हिस्सा।

4. जो खिड़की में दस्तख़त करता है... वह लेबल पर दस्तख़त कर देता है।

"मेरे मार्कर से," जूलिता ने ख़ुश होकर धीरे से कहा। "स्याही नहीं मिटती। कल नं. 3 नहीं लौटेगा। टोन्यो को तब पता चलेगा जब वह देखेगा। सरप्राइज़!"

"टोन्यो ने नं. 3 को दुकान से बाहर ले जाने को नहीं कहा,"
मैंने कहा। "शर्त दो।"
"उसे अच्छा लगेगा।"
"और मारा?"
"वे फ़ोन पर थीं। मैंने कह दिया: 'ऑटोग्राफ़ की मेज़।' और है भी।"
"और स्टैंड?"
"इसके बारे में उन्होंने पूछा नहीं।"

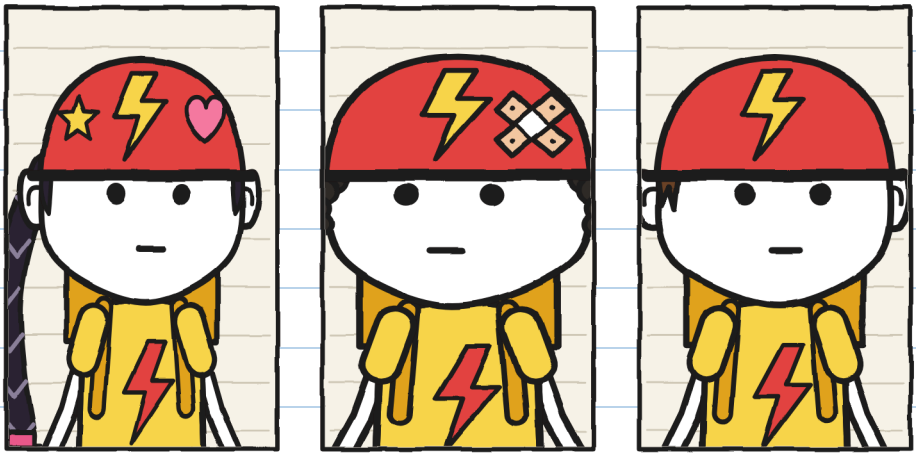
मैंने उसे फ़्लोरा और आठवें बीज की याद दिलाई। जूलिता ने फ़्लोरा को समय से पहले दस्तख़त नहीं करने दिए थे।
"वह और बात थी। वह डिलीवरी तैयार नहीं थी। यह तो जल्दी का रास्ता है।"
"तो तुम कर लो। मैं नहीं करता।"



वह सीढ़ी पर बैठ गया। बहुत गंभीर। किसी काम नहीं आया। –ज.

"बिजली" हमारी सड़क से पाँच बजकर दस मिनट पर गुज़रती है। तीन लोग, एक के पीछे एक।

"बिजली" के कार्ड



ज़ोई, "रॉकेट":
सबसे तेज़।
निकनेम वही रखती है।

ब्रूनो, "पंक्चर":
एक बार पंक्चर हुआ था।
दो साल पहले।

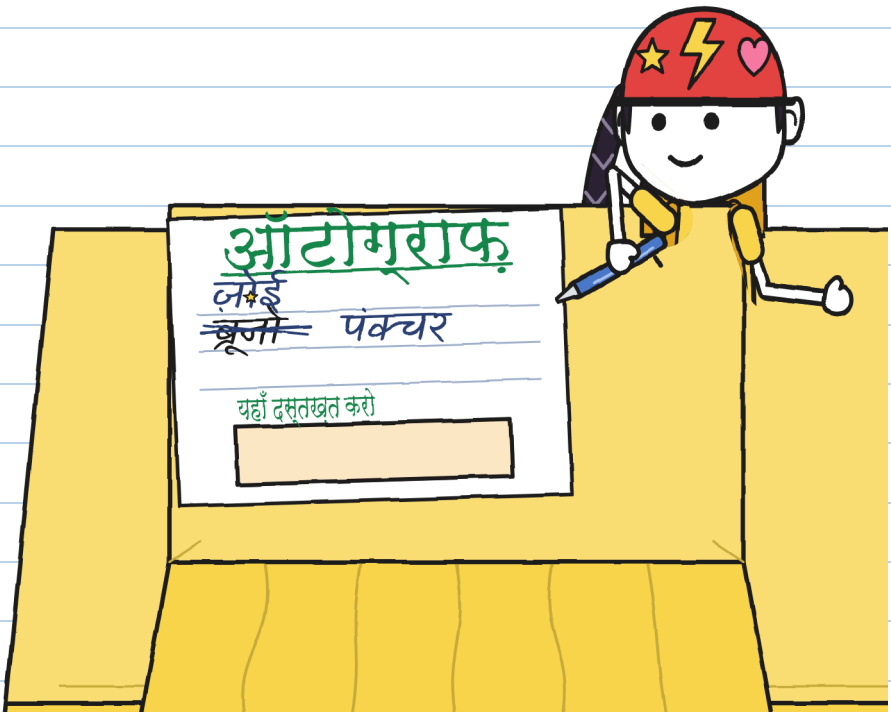
टोन्यो:
कोई निकनेम नहीं।
अभी तक।

"ऑटोग्राफ़? हमारे?" ज़ोई ने कहा। उसने ब्रेक लगाया और साइकिल से उतर गई।

किसी ने उनसे आज तक ऑटोग्राफ़ नहीं माँगा। इसीलिए यह काम करता है। –ज.

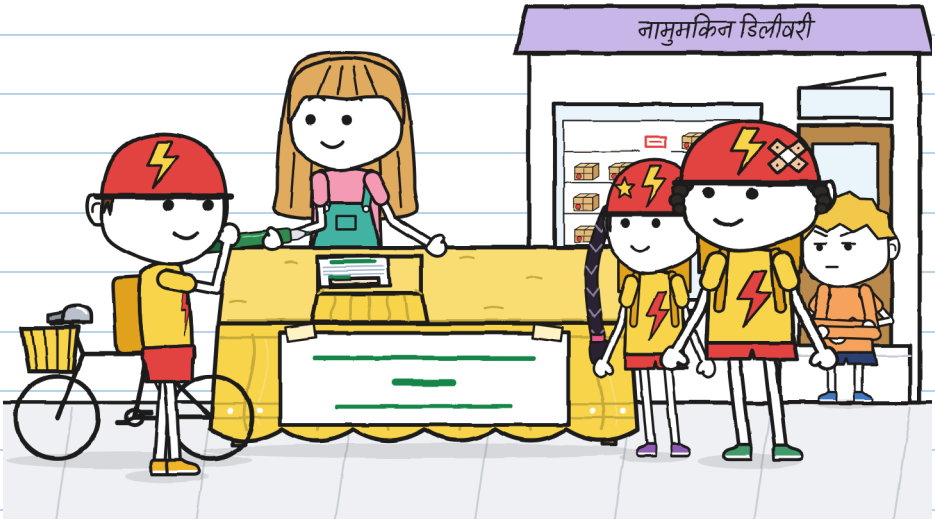
ज़ोई ने सबसे पहले दस्तख़त किए, "ओ" में एक तारा बनाकर। ब्रूनो ने "ब्रूनो" लिखा। ज़ोई ने नाम काट दिया और "पंक्चर" लिख दिया।

"'बिजली' में निकनेम कभी हटाए नहीं जाते," ब्रूनो ने बिना गुस्सा हुए मुझसे कहा। "मैं एक बार पंक्चर हुआ था।"



टोन्यो अब भी साइकिल पर था। वह मेज़ को वैसे देख रहा था जैसे रविवार को उसने नं. 3 को देखा था।

“अब तुम्हारी बारी, टोन्यो,” जूलिता ने कहा। “यहाँ नीचे, इस निशान वाली जगह में। सबसे अच्छी जगह।”
उसने उसे अपना हरा मार्कर दिया।
टोन्यो से पहली बार ऑटोग्राफ़ माँगा जा रहा था। वह साइकिल से उतरा और सीधा खड़ा हो गया।

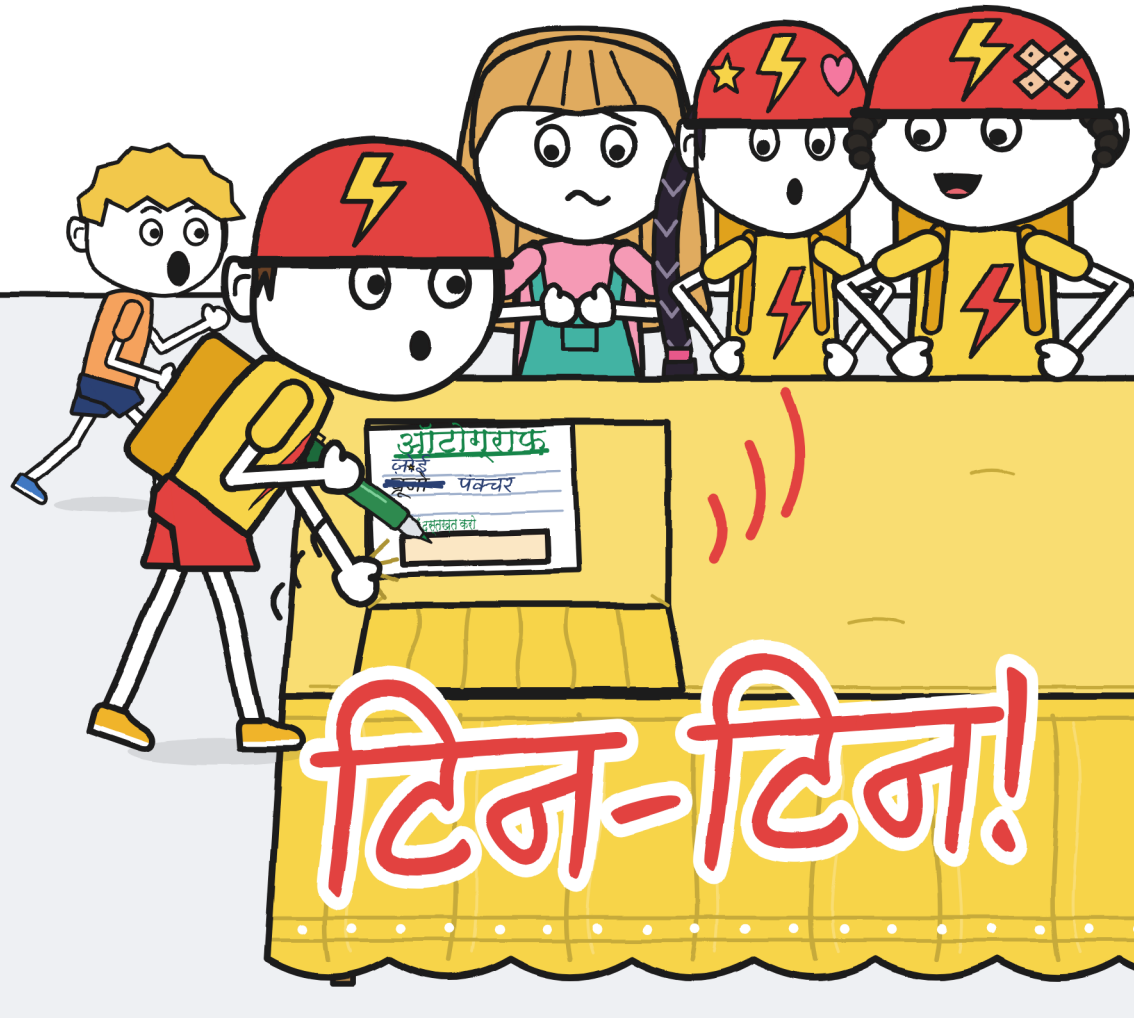


मैं सीढ़ी से सब देख रहा था। “मेरा इससे क्या लेना-देना,” मैं सोच रहा था। और चुप रहा।

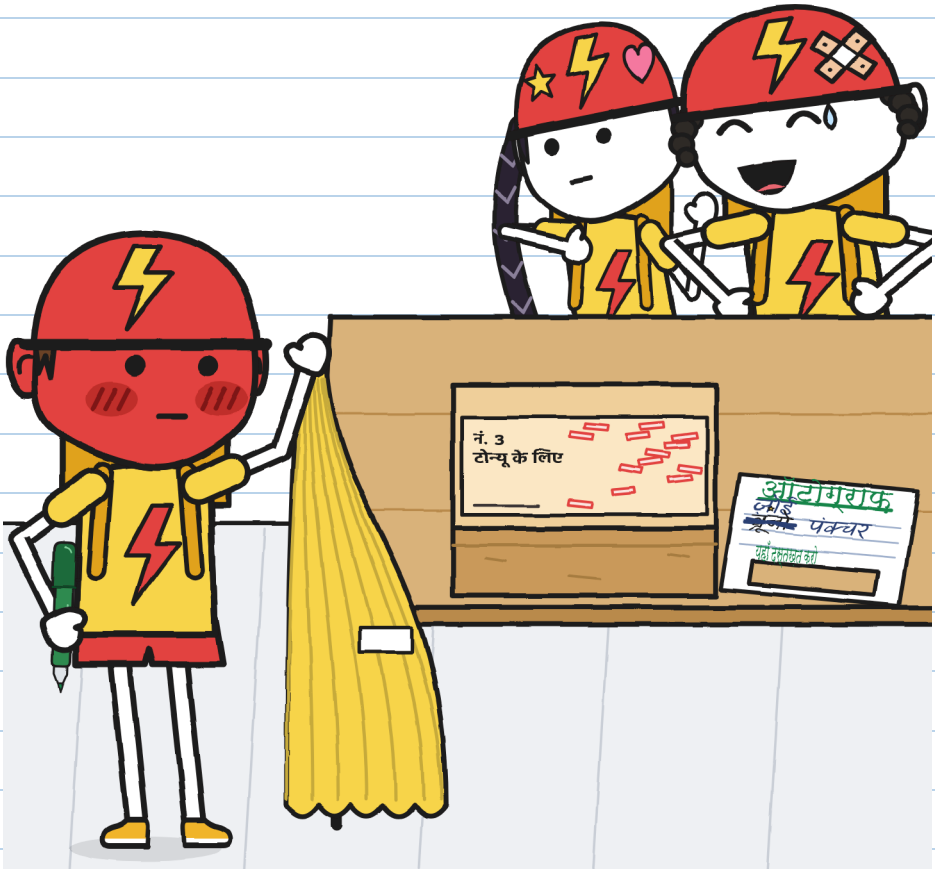
मैं उठ खड़ा हुआ।

“टोन्यो, रु...”

मैंने देर कर दी। टोन्यो ने स्टैंड झटके से खींचा। वह दस्तख़त करने वाला था। मेज़पोश के नीचे कुछ बज उठा:



टोन्यो ने मेज़पोश उठाया।



“टो-न्यू के लिए,” ज़ोई ने धीरे-धीरे और ख़ुश होकर पढ़ा।
“टोन्यू?” ब्रूनो ने कहा। वह हँस पड़ा।
ज़ोई नहीं हँसी। ज़ोई सोच रही थी।

टोन्यो चिल्लाया नहीं। उसने मार्कर की टोपी धीरे से लगाई। उसे शीट पर रख दिया। बिना दस्तख़त किए।
"'बिजली' किसी जाल पर दस्तख़त नहीं करती।"
वह साइकिल हैंडल से पकड़े पैदल चला गया। उसके पीछे कोई नहीं गया।



वह हेलमेट के रंग का था। यह शर्म वाला लाल नहीं था। यह गुस्से वाला लाल था।

लाल-मीटर में उसके लिए कोई नंबर नहीं है। –ज.

मारा बैंगनी कपड़ा लेकर बाहर आईं। उन्होंने यह नहीं पूछा कि पार्सल किसने निकाला। उन्होंने शेल्फ़ की ख़ाली जगह देखी, मेज़ देखी और जूलिता को देखा।
उन्होंने नं. 3 को ढका और गोद में उठा लिया।
"यह पार्सल पहुँचाया नहीं गया है," उन्होंने ज़ोई और ब्रूनो से कहा। "लेबल पर जो लिखा है, वह टोन्यो का मामला है।"



वे बेल बजाए बिना चले गए।

मैंने जूलिता को मेज़पोश, पोस्टर और शीट समेटने में मदद की। दो दस्तख़त और एक छेद। मैंने उससे "मैंने कहा था" नहीं कहा। "कोई बात नहीं" भी नहीं कहा। बात थी।
"तुमने तो कुछ किया ही नहीं," जूलिता ने कहा।
"मैंने ख़बर देर से दी। पहले दे सकता था। या मारा को फ़ोन कर सकता था।"



जूलिता अंदर गई और मारा को सब बता दिया। किसी की मदद के बिना। खिड़की, मेज़पोश, शेल्फ़, फ़ोन।
"टोन्यो को तुम ख़ुद बताओगी," मारा ने कहा।

बुधवार को टोन्यो पाँच बजकर दस मिनट पर गुज़रा। वह रुका नहीं। पाँच बजकर बीस मिनट पर लौटा। तीसरी बार भी गुज़रा। जूलिता फ़ुटपाथ के बीच में एक काग़ज़ लिए खड़ी थी।

माफ़ीनामा

मैंने तुम्हारा पार्सल बाहर निकाला।
मैंने तुम्हें चकमा देना चाहा।
मैंने तुम्हारा लेबल दूसरों को दिखा दिया।
माफ़ करना।
–जूलिता

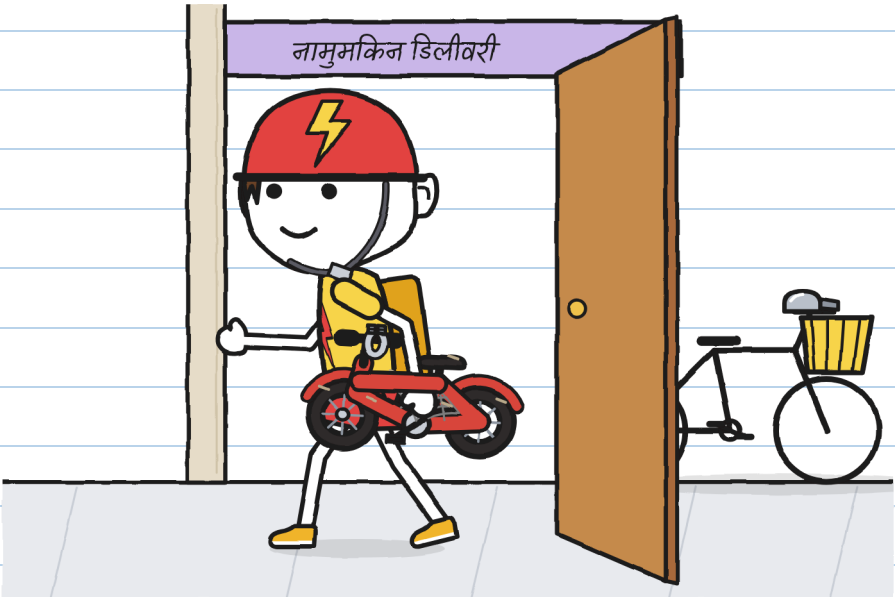
टोन्यो ने काग़ज़ साइकिल पर बैठे-बैठे पढ़ा।
"ठीक है। पढ़ लिया।"
"क्या तुम मुझे माफ़ करते हो?"
"मैंने कहा कि मैंने पढ़ लिया।"
उस शाम टोन्यो दुकान नहीं आया। उसका बक्सा ख़ाली रहा।

मैंने पूरा नाम लिखकर दस्तख़त किए। इतना तो करना ही था। –ज.

अध्याय ५

एक छोटी साइकिल

गुरुवार को टोन्यो दुकान में आया। उसने सड़क के दोनों तरफ़ नहीं देखा। उसकी बग़ल में एक साइकिल दबी थी।



वह उसकी साइकिल नहीं थी। या थी: बचपन वाली। "रविवार से मैं टिन-टिन के बारे में सोच रहा हूँ," टोन्यो ने कहा। "मुझे वह आवाज़ याद-सी है। मैं देखना चाहता हूँ कि मैं सही हूँ या नहीं।"

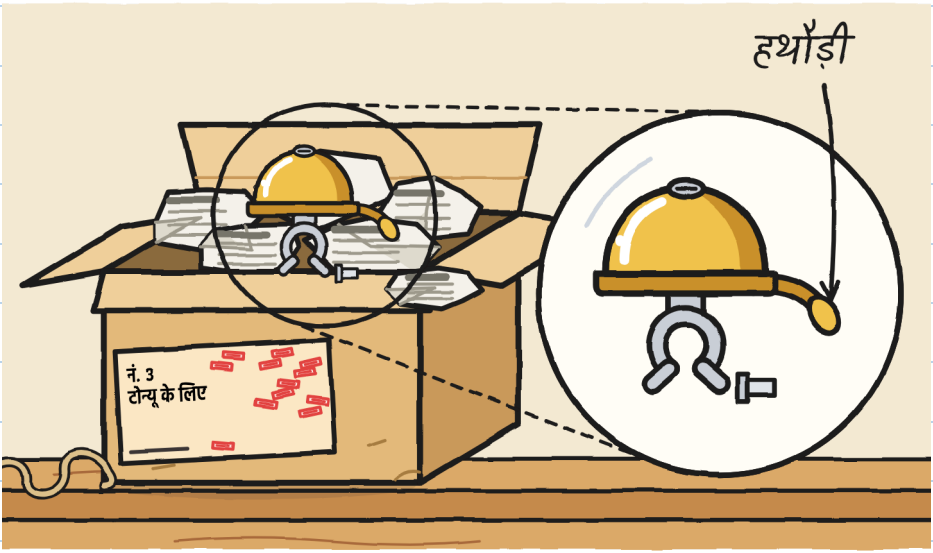
“मैं नं. 3 खोलना चाहता हूँ। यहाँ नहीं: यहाँ से सड़क दिखती है।”
मारा हमें दुकान के पीछे वाले कमरे में ले गई।
“खोलना दस्तख़त करना नहीं है,” उन्होंने कहा। “बिना दस्तख़त के, वह सुबह होते ही लौट आता है।”



“क्या मैं रुकूँ?” जूलिता ने पूछा। उसने पूछा।
टोन्यो ने देर लगाई।
“बिना छुए।”

“मैं डिब्बा नहीं छूती। और इस बारे में बात भी नहीं करती।”

टोन्यो ने डोरी खोली। अंदर पुराना अख़बार का काग़ज़ था। वह अपने-आप फट रहा था। और काग़ज़ के बीच...

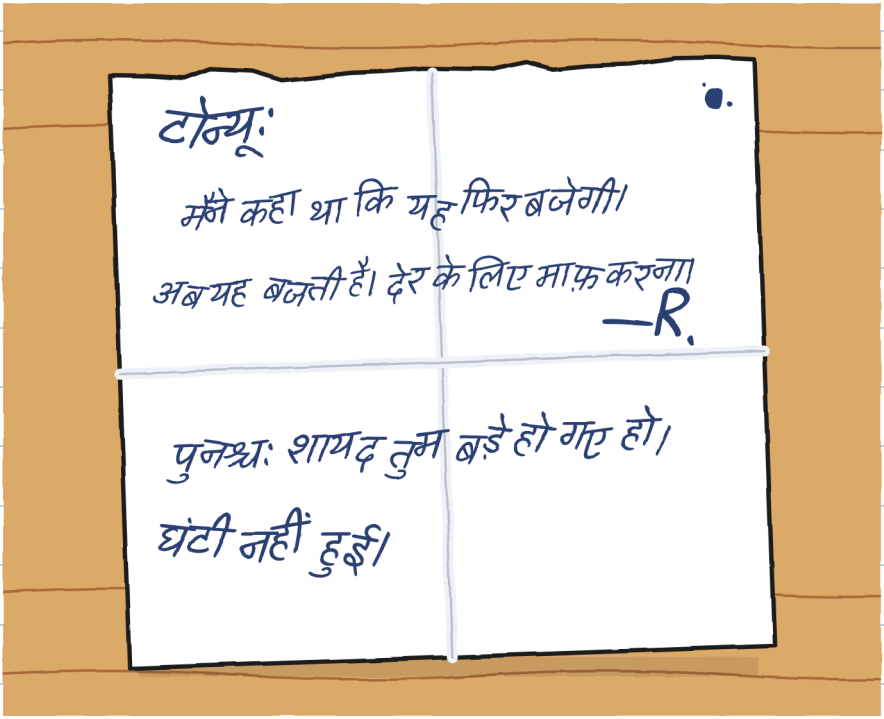


साइकिल की एक घंटी, छोटी और सुनहरी। एक स्प्रिंग छोटी हथौड़ी को उछालता है। हिलाओ, तो बजती है।

नं. 1 काटता था। नं. 2 भागता था। नं. 3 बस बजता है।

न ड्रैगन, न पंजे। एक घंटी। मुझे पसंद है। –ज.

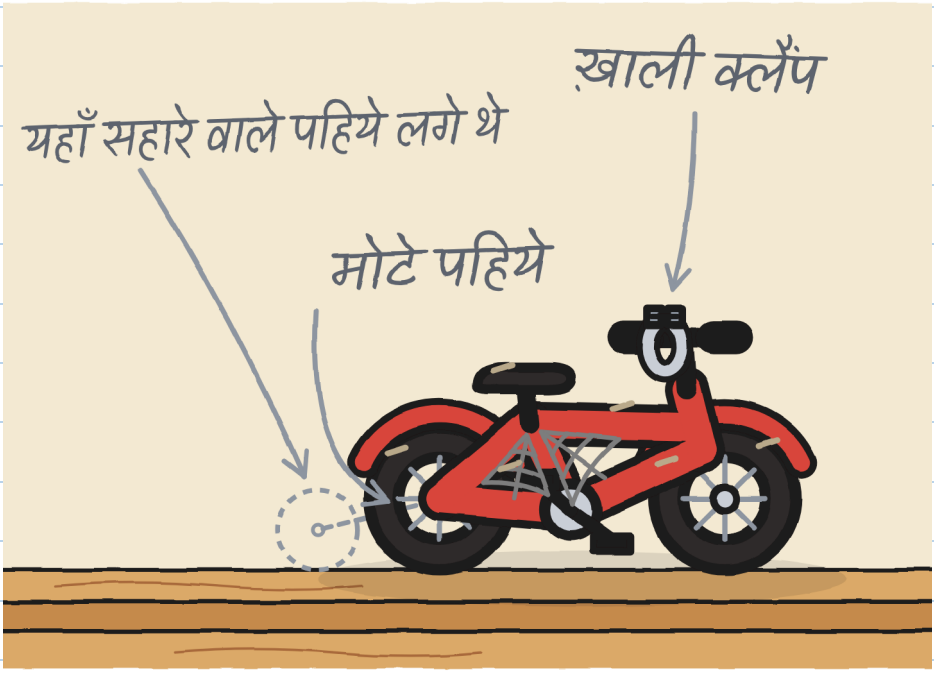
नीचे चार तह की हुई एक पर्ची थी।



टोन्यो ने उसे दो बार पढ़ा।
"कितनी बुरी लिखावट है," उसने कहा। और बहुत देर चुप रहा।

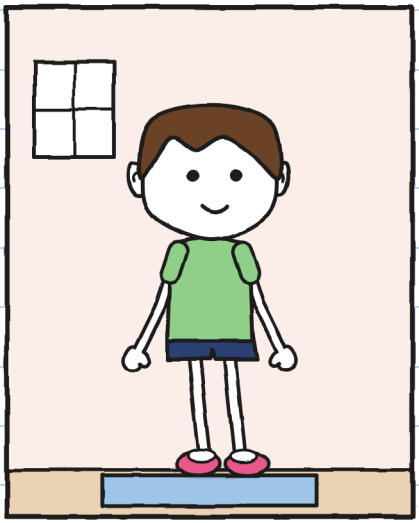
R. के वादे देर से पूरे होते हैं। फ्लोरा ने ऐसा कहा था। कितनी देर से, यह नहीं कहा। —ज.

तभी टोन्यो ने छोटी साइकिल मेज़ पर रख दी।

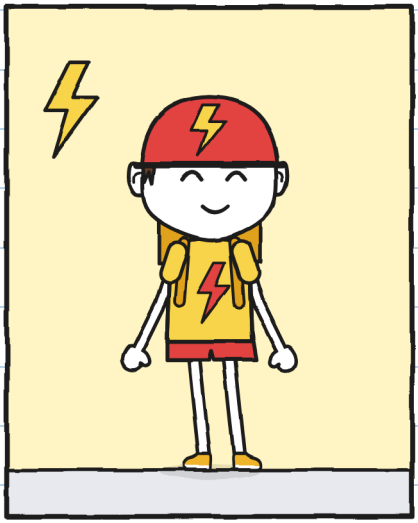


"यह मेरी थी। इस पर यही घंटी लगी थी, क्लैंप से कसी हुई। एक दिन घंटी बजना बंद हो गई: क्लैक। किसी ने कहा: 'लाओ, टोन्यू। मैं इसे ठीक कर दूँ और तुम्हें लौटा दूँ।'"
"कौन?" जूलिता के मुँह से निकल गया। उसने मुँह ढक लिया।
"चेहरा याद नहीं। घंटी याद है। और यह कि मैंने बहुत इंतज़ार किया।"

“घर में मुझे टोन्यू कहते हैं,” टोन्यो ने कहा। “‘बिजली’ में टोन्यो। पहले दिन मैंने अपने कार्ड पर यही लिखा था।”
“टोन्यू में बुराई क्या है?” मैंने पूछा।
“कुछ नहीं। जब तक ज़ोई न कहे। ‘बिजली’ में निकनेम कभी हटते नहीं। ब्रूनो को देखो।”



घर पर: टोन्यू



“बिजली” में: टोन्यो

“ब्रूनो ने मंगलवार से अब तक मुझे छह बार टोन्यू कहा है,” टोन्यो ने जोड़ा।
जूलिता अपने कोने में सिकुड़ गई।

“क्या तुम अब भी इसमें बैठ सकते हो?” जूलिता ने पूछा।
वह रोक नहीं पाई।
मारा ने साइकिल ज़मीन पर उतार दी। टोन्यो बैठ गया।



आ गया। थोड़ा-बहुत।
मारा ने एक आवाज़ निकाली, लगभग हँसी जैसी। टोन्यो भी हँस पड़ा। मैंने उसे शनिवार के बाद से हँसते नहीं देखा था।

लाल-मीटर: 0। लिख रही हूँ, क्योंकि यह भी गिना जाता है। –ज.

"तुम्हारी साइकिल पर अब 'बिजली' की बेल है," मैंने कहा। "यह घंटी लगाना ज़रूरी नहीं है। तुम इसे रख सकते हो। या इसे लौट जाने दे सकते हो।"
"मुझे पता है," टोन्यो ने कहा। पर उसने मुझे देखा, जैसे यह पहली बार सुन रहा हो।

जूलिता ग्यारह मिनट चुप रही, सुनती रही, मार्कर एक तरफ़ रखकर।





ग्यारह मिनट। मेरी ज़बान सो गई। –ज.

"मैं इसे अकेले आज़माना चाहता हूँ," टोन्यो ने कहा। मारा, जूलिता और मैं बाहर निकल आए। टोन्यो ने पीछे वाला कमरा बंद कर लिया।

न सुनने के लिए जूलिता दुकान के दूसरी तरफ़ चली गई और मैंने चित्र बनाया। टोन्यो की सीट पर अब छतरी है: कपड़े की एक छत। फिर भी सब सुनाई दिया।



टिन-टिन।
यह वही टिन-टिन था जो शनिवार को सुना था। फिर एक और। और फिर बहुत देर तक कोई नहीं।

टोन्यो बाहर निकला। एक हाथ में घंटी थी और बग़ल में डिब्बा।

"मैं इसे कल तक ले जा रहा हूँ। बिना दस्तख़त किए।"

"सुबह होते ही यह लौट आएगा," मारा ने कहा।

"लौट आए। मैं इसे एक रात अपने पास रखना चाहता हूँ।"

"और अगर टोन्यो घंटी को डिब्बे से बाहर छोड़ दे?" मैंने पूछा।

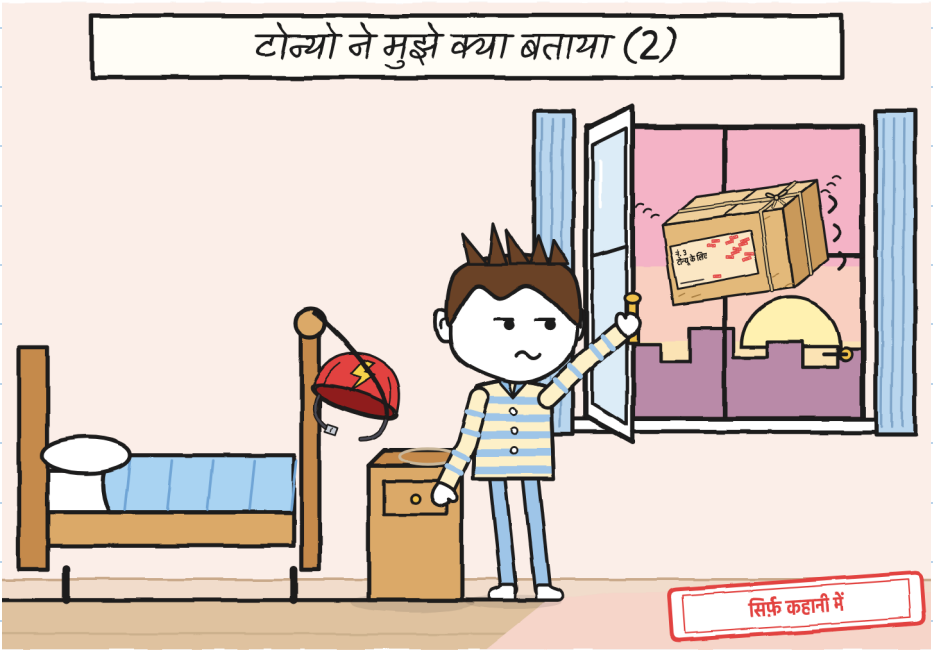
"मैंने कभी आज़माया नहीं," मारा ने कहा। "और सुबह सात बजे आज़माने नहीं जा रही।"

टोन्यो ने घंटी और पर्ची डिब्बे में रख लीं।



कल तक चौदह घंटे बाक़ी हैं। मैं उन्हें गिनूँगी। –ज.

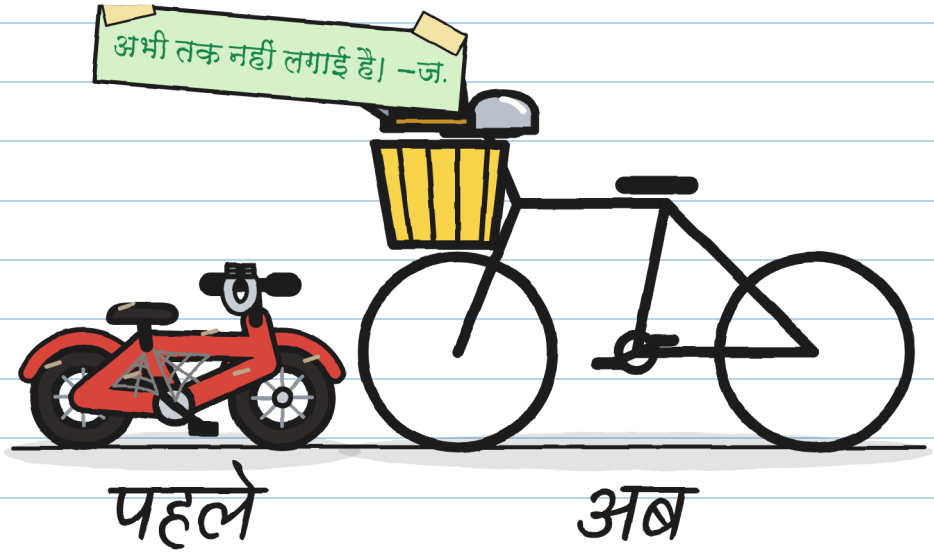
शुक्रवार को मेरी सड़क फिर बज उठी: टिन-टिन, टिन-टिन, टिन-टिन। नं. 14 की वापसी।
पिछली रात का मैंने नहीं देखा। टोन्यो ने बताया:



"इस बार नं. 3 मेरे सिरहाने की मेज़ पर सोया। पायदान पर नहीं। सुबह होते ही वह शीशे पर टकराने लगा। मैंने खिड़की खोल दी।"

उसने एक पार्सल के लिए खिड़की खोल दी। कितना शिष्ट। –ज.

मैंने टोन्यो की दोनों साइकिलें साथ-साथ बनाईं। अब वाली साइकिल में मैंने घंटी जोड़ दी। अच्छी लगती है।
जूलिता ने बनी हुई घंटी पर एक पर्ची चिपका दी।



वह सही थी। मुझे थोड़ा बुरा लगता है।

अध्याय 5

अकेले में

शुक्रवार की शाम नं. 3 अपने शेल्फ़ पर था। उस पर चौदह मुहरें थीं। टोन्यो अपने बक्से में बैठा उसे दूर से देख रहा था।

जूलिता दो दिन से कुछ तैयार कर रही थी। मुझे डर लगा। वह दो विकल्पों वाली एक शीट थी।

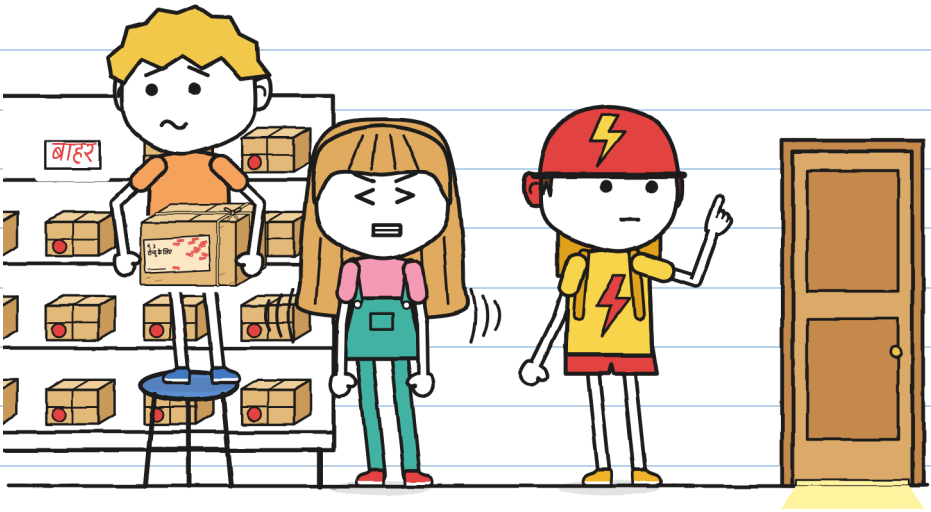


टोन्यो ने शीट पढ़ी। उसने मारा को देखा।
"अगर मैं दस्तख़त करूँ, तो किसे पता चलेगा?"
"मुझे। और मेरी रजिस्टर वाली किताब को: उसमें मैं डिलीवरी लिखती हूँ। वह दराज़ से बाहर नहीं जाती।"
"और 'बिजली' को?"
"मैं उसे नहीं बताती। रजिस्टर कोई पोस्टर नहीं होता।"



पोस्टर पर नंबर होते हैं। नाम दराज़ में रहते हैं। –ज.

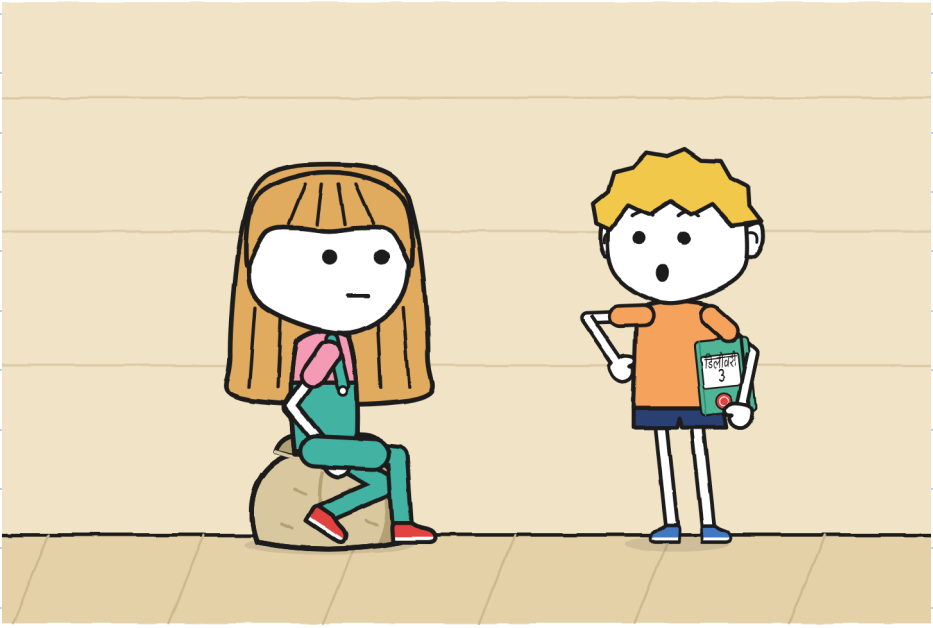
टोन्यो अपने बक्से से उठा।
"मैं B चुनता हूँ।"
जूलिता उछली नहीं। मैंने उसे न उछलते देखा।
"पीछे वाले कमरे में," टोन्यो ने आगे कहा। "तुम दोनों के साथ।"
"मैं भी?" जूलिता ने पूछा।
"तुम सबसे ज़्यादा मुझे दस्तख़त करते देखना चाहती हो। तुम्हें अपने सामने रखना बेहतर है।"



पीछे वाले कमरे में टोन्यो ने घंटी और पर्ची फिर निकालीं।
उसने उन्हें धीरे-धीरे, सावधानी से देखा।
"दस्तख़त करने से पहले मैं देखता हूँ कि क्या दस्तख़त कर रहा हूँ," उसने किसी की तरफ़ देखे बिना कहा।
जूलिता गुलाबी हो गई, अपनी टी-शर्ट की तरह।



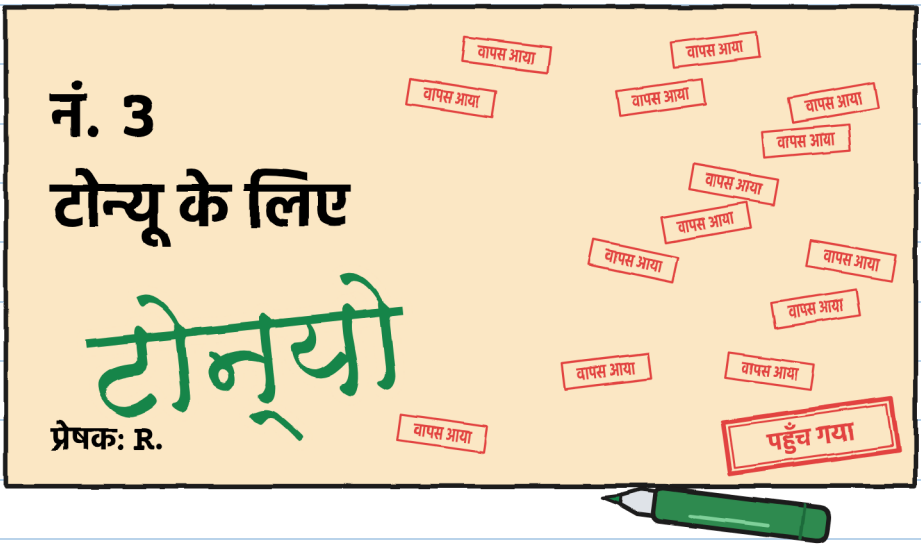
जूलिता ने टोन्यो को अपना हरा मार्कर दे दिया। वह कोने में एक बोरे पर बैठ गई।
"क्या कर रही हो?" मैंने पूछा।
"अपने हाथों पर बैठी हूँ। ताकि मदद न कर सकूँ।"



मैंने डायरी बंद की और बग़ल में दबा ली।

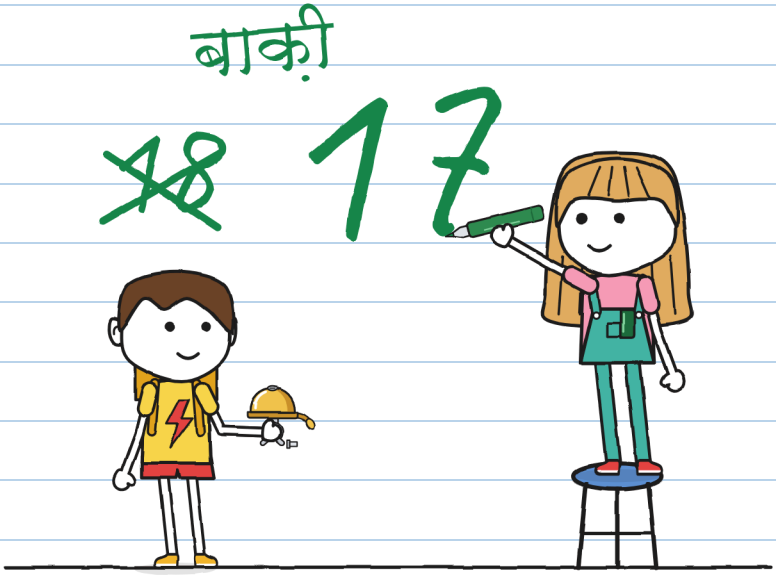
फिर उसने सब लिख लिया। –ज.

टोन्यो ने मार्कर की टोपी खोली और दस्तख़त कर दिए।



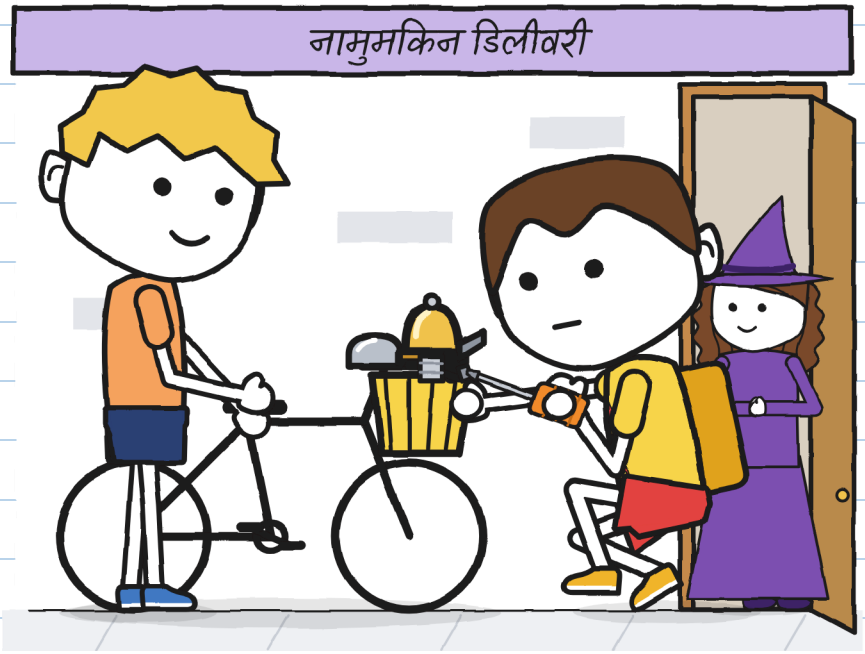
लेबल पर "टोन्यू" लिखा था। दस्तख़त में "टोन्यो"।
"ऐसे चलेगा?" टोन्यो ने पूछा। "नाम तो वही नहीं है।"
"दस्तख़त वही करता है जो पाता है," मारा ने कहा। "और पाया तुमने है।"

मारा ने डिलीवरी अपनी किताब में लिखी। जूलिता ने नीला स्टूल पकड़ रखा था। उसने उसे ज़मीन पर रख दिया।
"क्या मैं पोस्टर बदल सकती हूँ?" उसने मारा से नहीं, टोन्यो से पूछा।
टोन्यो ने पोस्टर देखा।
"इस पर तो बस एक नंबर लिखा है।"
"बस।"
"ठीक है।"



मैंने पहले पूछ लिया था। लिख लो। –ज.

फ़ुटपाथ पर टोन्यो ने अपनी साइकिल दीवार से टिकाई।
उसने बैग से एक पेचकस निकाला।
"क्या तुम घंटी लगा रहे हो?" मैंने पूछा।
"हाँ।"
"और 'बिजली' की बेल?"
"वह 'बिजली' की है। यह मेरी है।"



टोन्यो ने घंटी लगाई। मैंने बस साइकिल थामी, और वह भी उसके कहने पर। टोन्यो ने एक उँगली से हथौड़ी को छुआ।
टिन-टिन।

पाँच बजकर दस मिनट पर "बिजली" गुज़री। ब्रूनो ने ब्रेक लगाया।

"यह क्या बज रहा है?"

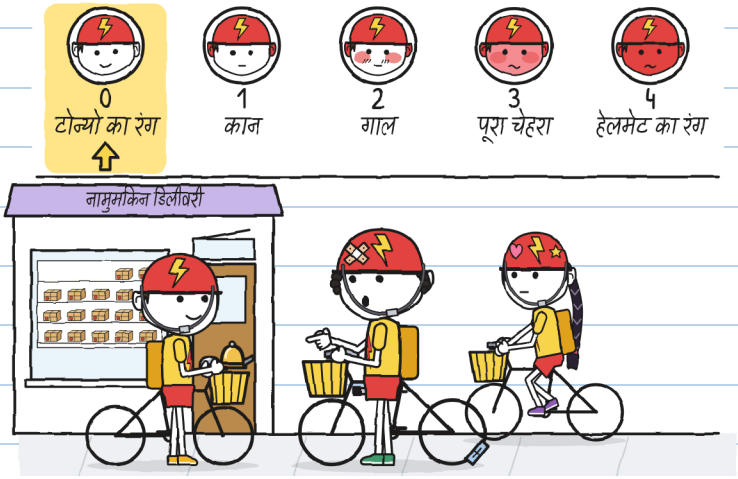
"एक घंटी।"

"कहाँ से आई?"

"यह मेरी थी।"

"जब तुम टोन्यू थे तब की?"

मैंने टोन्यो को देखा। ज़रा भी लाल नहीं। कान तक नहीं।

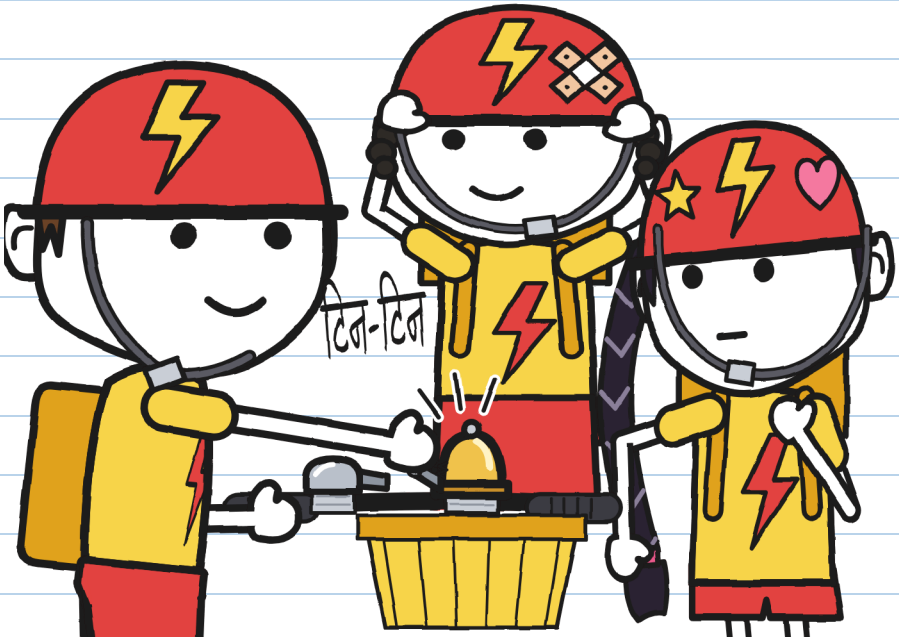


"जब मुझे ऐसे बुलाते थे तब की। अब मेरा नाम टोन्यो है। और तुम्हारा क्या नाम है?"

"पंक्..." ब्रूनो चुप हो गया। "ब्रूनो।"

"तो बस, ब्रूनो।"

ब्रूनो ने सिर उठाया। "बिजली" में दो साल से किसी ने उसे ब्रूनो नहीं कहा था।
ज़ोई ने मुँह खोला।
टोन्यो ने हथौड़ी को छुआ। एक बार।
टिन-टिन।
ज़ोई ने मुँह बंद कर लिया। सोचा।
"अच्छा बजता है," उसने कहा। "हमें देर हो रही है, टोन्यो।"



उसने कहा "टोन्यो"। बिना कुछ जोड़े। –ज.

उस रात मैंने फिर परदा ऊपर छोड़ दिया।
"फिर निगरानी?" मम्मी ने पूछा।
"आज मैं यह निगरानी कर रहा हूँ कि कुछ न हो।"
"वह तो मैं बहुत अच्छा करती हूँ। सो जाओ।"



मैं मार्कर खुला रखकर सो गई। मेरा तकिया हरा हो गया है। –ज.

सुबह हुई।
कुछ नहीं बजा।
न टिन-टिन, न कोई खिड़की, न ५ नंबर वाला कुत्ता।
यह सबसे प्यारी ख़ामोशी है जो मैंने अपनी सड़क पर सुनी।

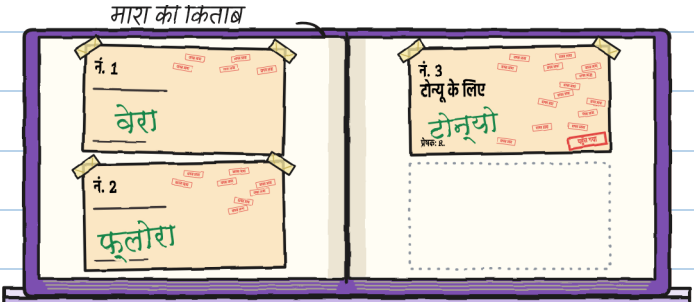


अध्याय 6

फ़िलहाल

शनिवार को दस बजे मैंने शेल्फ़ का चित्र बनाया। सत्रह पार्सल। तीन ख़ाली जगहें।

मारा ने लेबल अपनी किताब में चिपका दिया, बाक़ी दो के साथ।



एक अंडा, कुछ बीज और एक घंटी। तीनों देर से पहुँचे। तीनों पहुँचे।

तीसरे पर टोन्यो ने दस्तख़त किए। इस बार मैंने उसे बस मारकर पकड़ाया। –ज.

टोन्यो अपने बक्से पर बैठा और हिला। इस बार उसने शेल्फ़ की तरफ़ नहीं देखा।

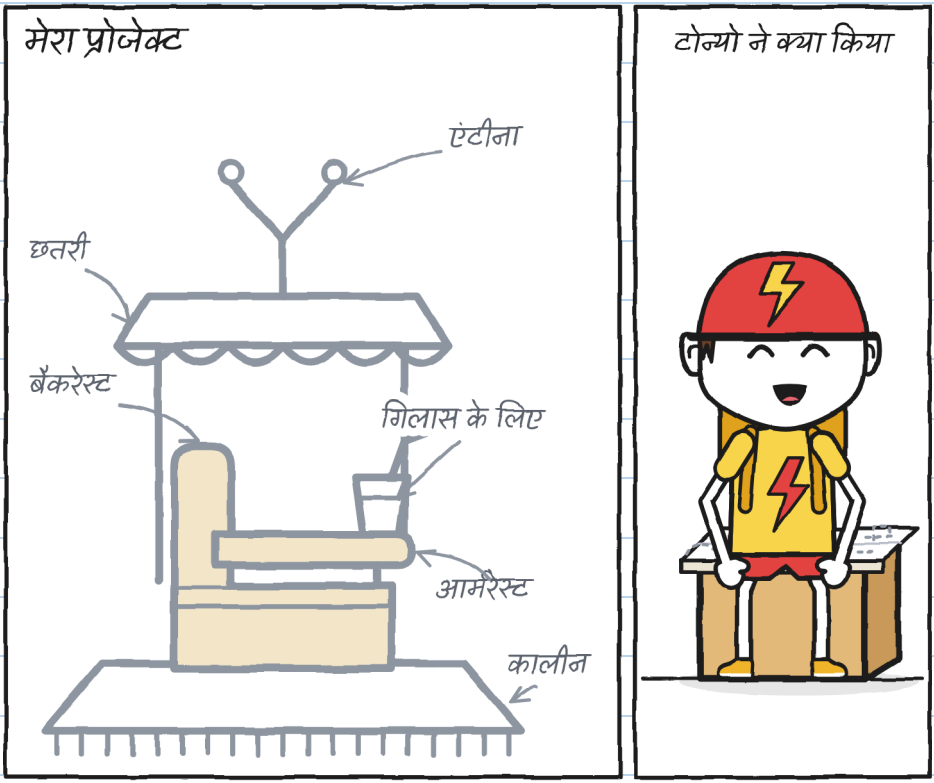
"यह तुम्हारी सीट 'फ़िलहाल' वाली है," मारा ने कहा।

"फ़िलहाल मेरे लिए ठीक है," टोन्यो ने कहा।



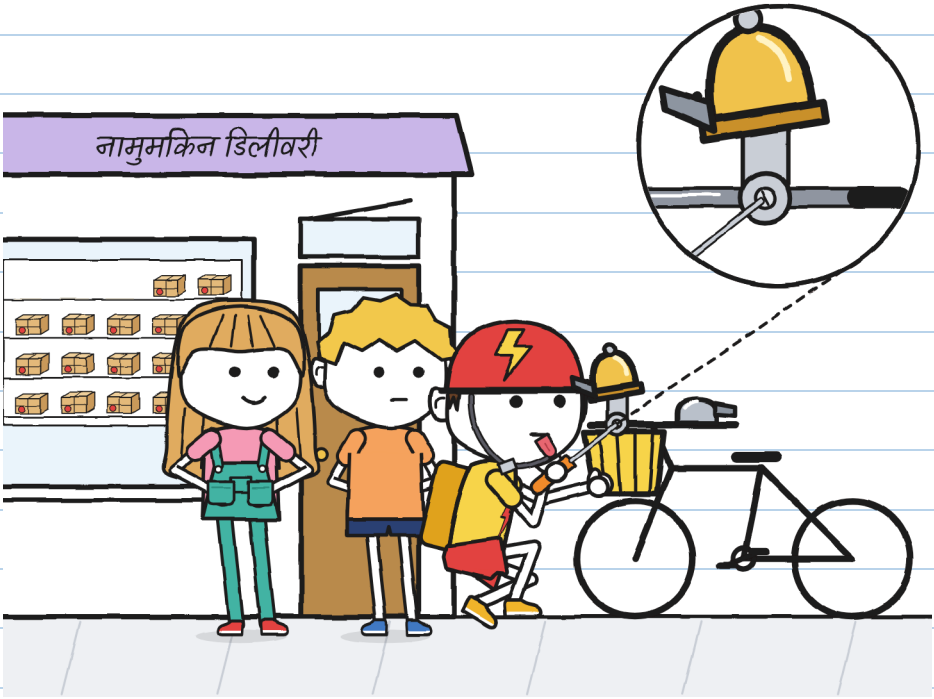
"फ़िलहाल" सालों तक चल सकता है। नं. 3 से पूछ लो। –ज.

मैंने टोन्यो को अपना प्रोजेक्ट दिखाया: उसकी सीट का चित्र। उसमें पूरा हफ़्ता लगा।



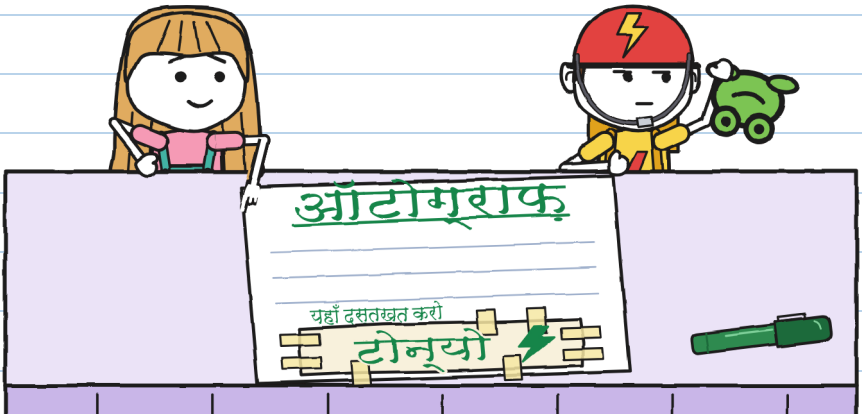
"क्या यह मुझे दे दोगे?"
उसने चित्र को चार तह किया। उसे डिब्बे पर रखा और उस पर बैठ गया।

बाहर घंटी हैंडल पर टेढ़ी लगी थी।
"तुम कसो, मैं इसे पकड़े रखता हूँ," मैंने कहा।
"मैं कर लूँगा।"
टोन्यो ने कर लिया। मैं उस पेच को देख रहा था। उसमें सौ चक्कर लग रहे थे।



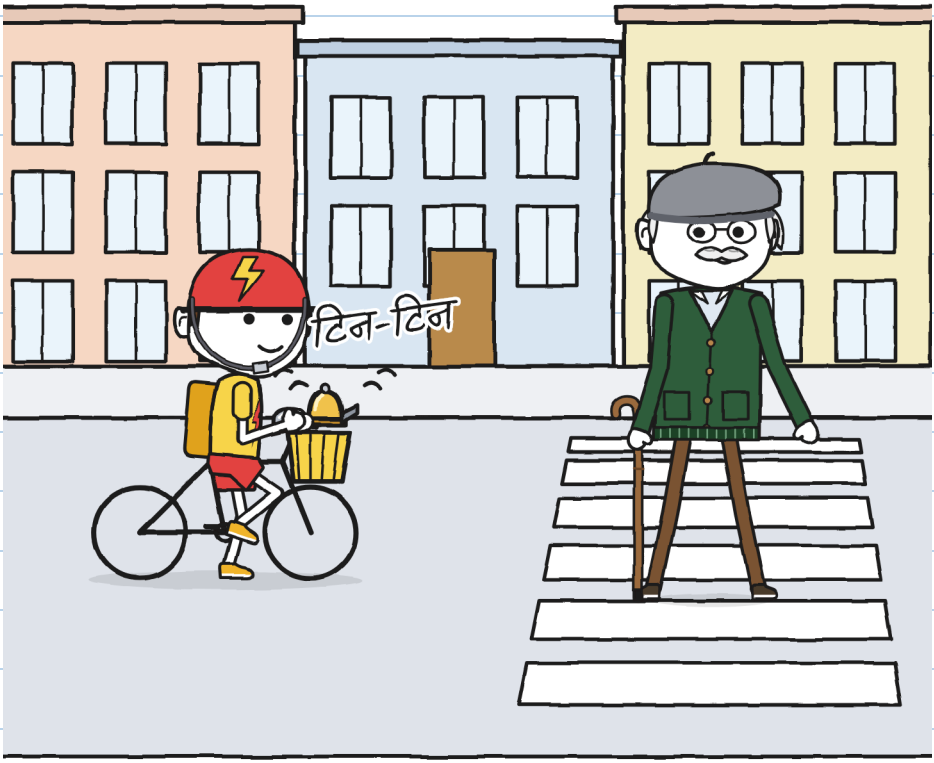
जूलिता ने ऑटोग्राफ़ वाली शीट निकाली। छोटी खिड़की काग़ज़ और ढेर सारे टेप से ढकी थी।

"यह वही जाल वाली शीट है," जूलिता ने मारा से कहा, बिना सवाल का इंतज़ार किए। "मैंने इसे ठीक कर दिया है।" उसने शीट टोन्यो के सामने रख दी।
"क्या तुम मुझे ऑटोग्राफ़ दोगे? सचमुच वाला। नीचे कुछ नहीं है।"
टोन्यो ने शीट के नीचे देखा। काउंटर के नीचे देखा। उसने मेंढक को पलटकर देखा।
"ठीक है।"



मैं इसी लायक़ हूँ। –ज.

दोपहर को टोन्यो एक डिलीवरी पर निकला। टोपी पहने एक बुज़ुर्ग अपनी छड़ी के साथ धीरे-धीरे सड़क पार कर रहे थे। टोन्यो रुक गया। इंतज़ार किया। उसने बस एक बार घंटी बजाई। जैसे कह रहा हो: "मैं यहाँ हूँ।"
टिन-टिन।



बुज़ुर्ग ने सलाम करने के लिए छड़ी उठाई और धीरे-धीरे चलते रहे।

“ये दादा अंतोनियो हैं,” मारा ने कहा। “मेरी लिस्ट के दूसरे टोन्यू।”

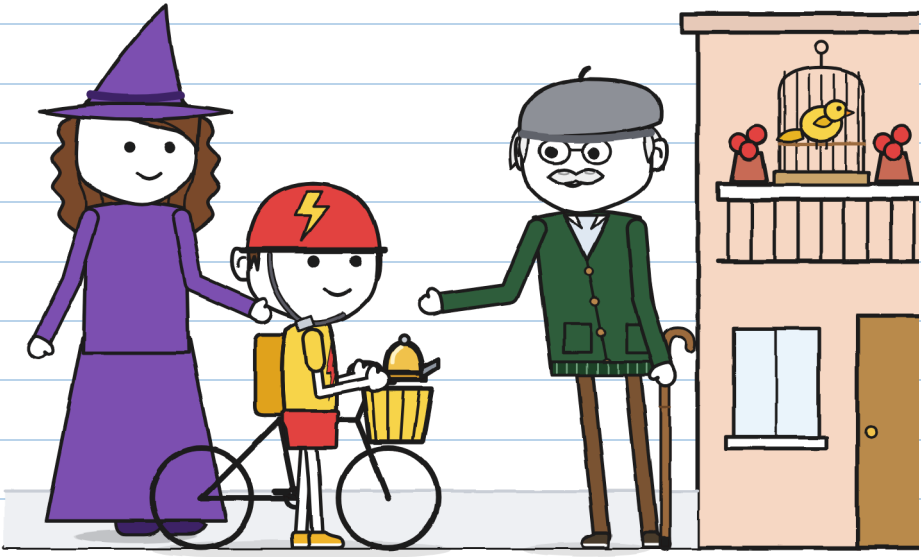
“क्या घंटी नई है?” बुज़ुर्ग ने हमारे फ़ुटपाथ तक आकर पूछा।

“पुरानी है,” टोन्यो ने कहा। “यह मेरी थी। तब की, जब मुझे टोन्यू कहते थे।”

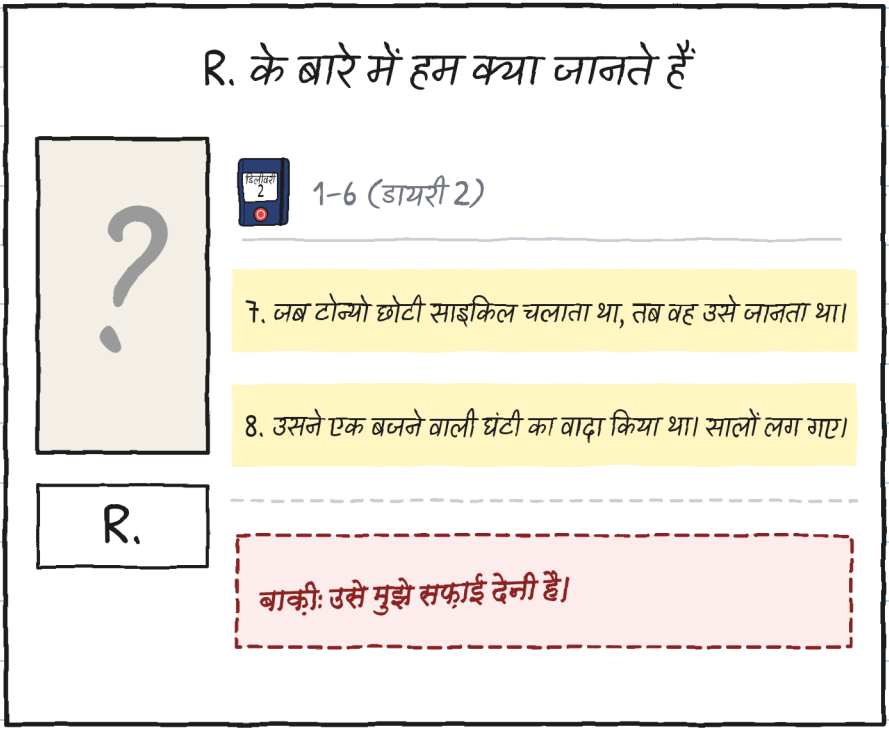
“मुझे साठ साल से किसी ने ऐसे नहीं बुलाया। अदला-बदली कर लें? तुम दादा अंतोनियो, मैं टोन्यू।”

टोन्यो ने सोचा।

“फ़िलहाल नहीं।”

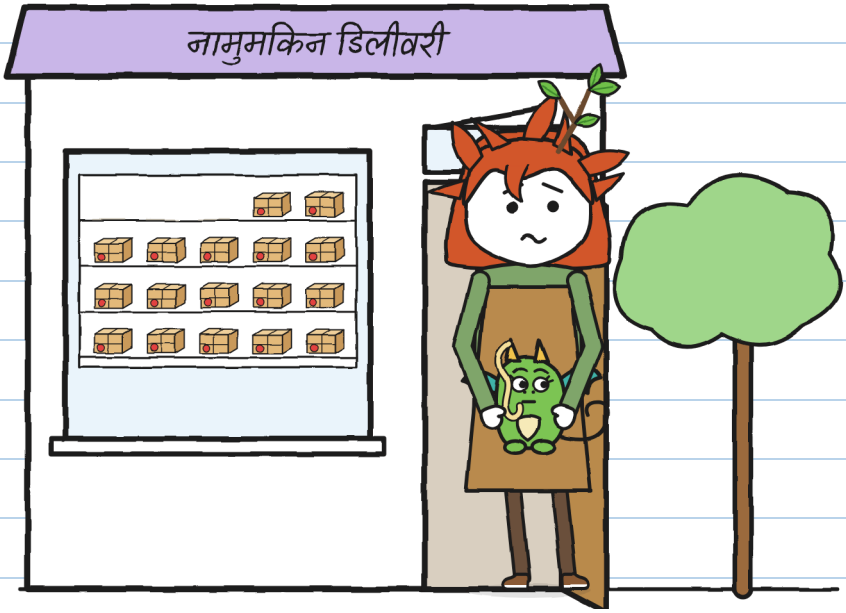


मैंने R. का कार्ड निकाला। उसमें पहले से छह सुराग़ थे। मैंने दो और जोड़ दिए। टोन्यो ने मुझसे पेन माँगा। उसने नीचे अपनी लिखावट में लिखा।



"क्या तुम उसे धन्यवाद दोगे?" जूलिता ने पूछा।
"धन्यवाद भी और शिकायत भी। दोनों। अभी मुझे पता नहीं कि R. कौन है।"

एक बजे वेरा आई। गोद में चूरा थी और बालों में एक टहनी। "मुझे मदद चाहिए। चूरा अब उड़ना सीख गई है। उसे उतरने के लिए एक सुरक्षित जगह चाहिए।" वे रुकीं। "कल उसने मेरा सूप चुना।"



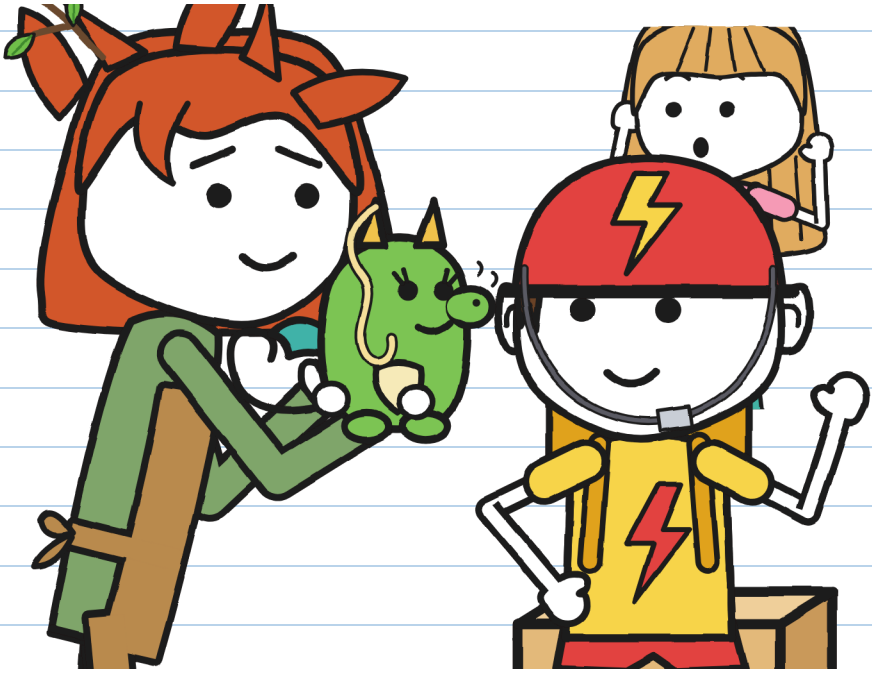
चूरा ने मुझे देखा और मेरी "मैंने नहीं किया" वाली शक्ल बना ली।

तुम्हारी वाली, हू-ब-हू। सेवई समेत। –ज.

“क्या आपको किसी तेज़ आदमी की ज़रूरत है?” टोन्यो ने अपने बक्से से पूछा।

“मेरी मदद करने के लिए इंतज़ार करना आना चाहिए,” वेरा ने कहा।

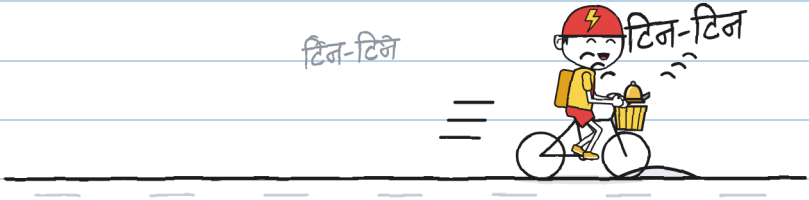
“वह भी आता है। इसी हफ़्ते से।”



मैं भी इंतज़ार करना जानती हूँ। अब हो गया? –ज.

डिलीवरी नं. 3। हर किसी को कितना समय लगा:

	"बिजली": दस मिनट।
	R.: सालों।
	टोन्यो: छह दिन।
	जूलिता, सुनती हुई: ग्यारह मिनट (रिकॉर्ड)।

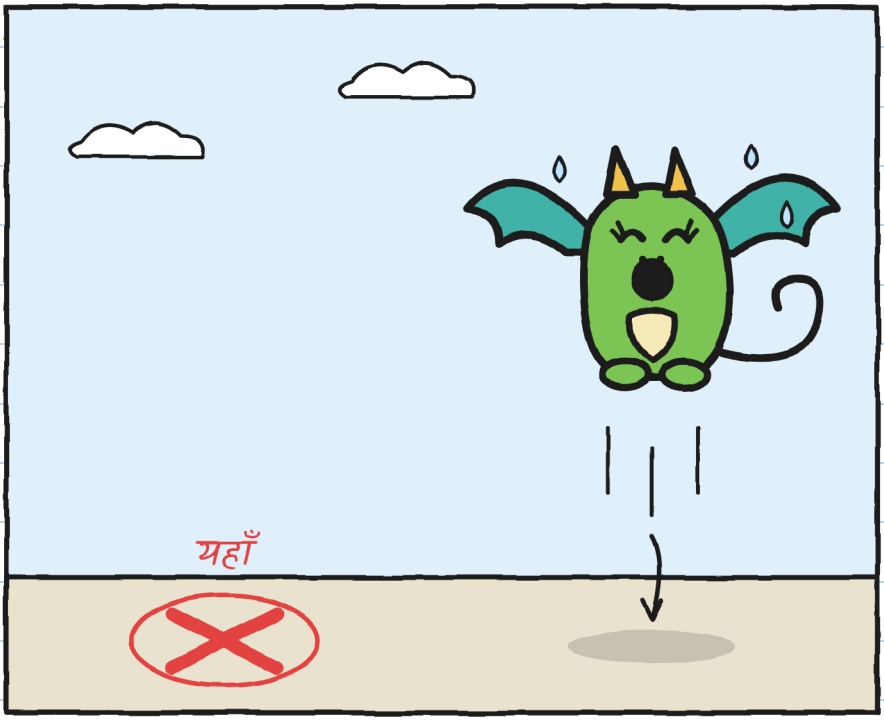


टोन्यो डिलीवरी करने निकल गया। सड़क पर टिन-टिन बजा। फिर एक और।
इस बार घंटी वह ख़ुद बजा रहा था।

मैं अब भी अकेली बजती हूँ। मैं सीख रही हूँ। –ज.

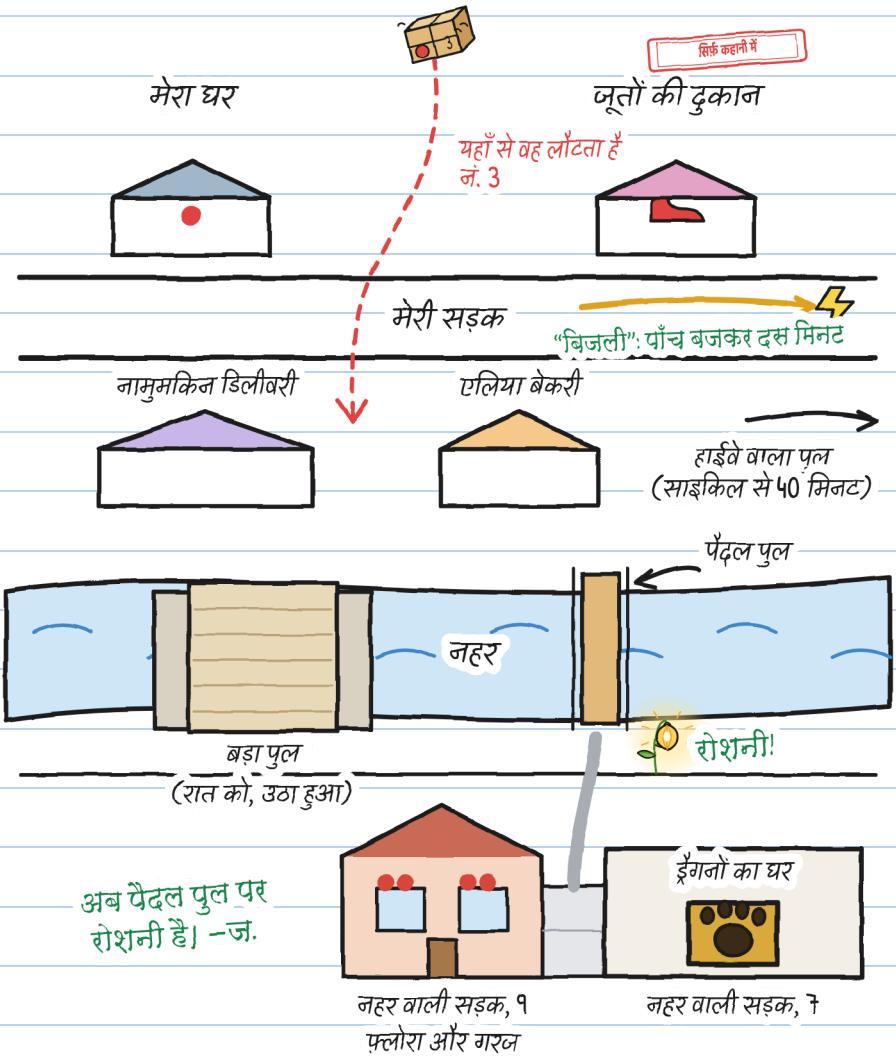
नामुमकिन डिलीवरी · ५

(बहुत जल्द)



ड्रैगन की वह बच्ची कहाँ उतरेगी जो तुम्हारी हर बात की नक़ल उतारती है? –ज.

मोहल्ला (वर्ज़न 3)


सिर्फ़ कहानी में
मेरा घर
जूतों की दुकान
यहाँ से वह लौटता है
नं. 3
मेरी सड़क
"बिजली": पाँच बजकर दस मिनट
नामुमकिन डिलीवरी
एलिया बेकरी
हाईवे वाला पुल
(साइकिल से 40 मिनट)
पैदल पुल
नहर
रोशनी!
बड़ा पुल
(रात को, उठा हुआ)
अब पैदल पुल पर
रोशनी है। –ज.
इंगनों का घर
नहर वाली सड़क, १
फ़्लोरा और गरज
नहर वाली सड़क, ७

और तुम्हें क्या कहकर बुलाएँ?

टोन्यो को टोन्यू कहकर बुलाते थे। अब वह अपना नाम ख़ुद चुनता है। और तुम?

मुझे इस नाम से बुलाया जाना पसंद है...

तुम मुझे इस नाम से भी बुला सकते हो...

मुझे इस नाम से न बुलाया जाए तो अच्छा...

मैं जूलिता हूँ। "ज." सिर्फ़ तब, जब मैं दस्तख़त करती हूँ। –ज.

एक कहानी, छह साइज़

इसके छह साइज़ हैं, 3 से 16 साल तक, और 20 से ज़्यादा भाषाएँ। XXS, XS, S, M और L में पन्ने भी वही हैं और चित्र भी वही। XL एक उपन्यास है। बस कहने का तरीक़ा बदलता है।

साइज़ XXS · PRE-A1
मारा और टोन्यो हँसते हैं। क्या तुम्हें लाल साइकिल दिखती है?

साइज़ XS · A1
मारा लगभग हँस पड़ी। टोन्यो भी हँसा। मैंने उसे शनिवार के बाद से हँसते नहीं देखा था।

साइज़ S · A2
मारा ने एक आवाज़ निकाली, लगभग हँसी जैसी। टोन्यो भी हँस पड़ा। मैंने उसे शनिवार के बाद से हँसते नहीं देखा था।

साइज़ M · B1
मारा ने एक आवाज़ निकाली। वह हँसी जैसी थी। टोन्यो भी हँस पड़ा। मैंने उसे शनिवार के बाद से हँसते नहीं देखा था।

साइज़ L · B2
मारा ने ऐसी आवाज़ निकाली जो किसी और के मुँह से हँसी होती। टोन्यो भी हँस पड़ा। मैंने उसे शनिवार के बाद से हँसते नहीं देखा था।

साइज़ XL · B2–C1
सचित्र उपन्यास · 13+

CEFR के स्तर केवल मार्गदर्शन के लिए हैं।

सबका अपना साइज़। टिन-टिन वही। —ज.

परिवारों और शिक्षकों के लिए

हर अध्याय का अभ्यास linguaula.com पर करो

असली साइकिल: क्या करें

1. हेलमेट हमेशा, और ठीक से बँधा हुआ। "बस यहीं पास तक जाना है" हो तब भी।
2. ऐसे चलो कि लोग तुम्हें देख और सुन सकें: लाइटें, चमकीले कपड़े और बेल। बेल सावधान करती है; हुक्म नहीं चलाती।
3. हैंडल पर दोनों हाथ। अगर कुछ तुम्हारा ध्यान भटकाए, तो किसी सुरक्षित जगह पर रुको।
4. फ़ुटपाथ पैदल चलने वालों का है: वहाँ साइकिल हाथ से पकड़कर पैदल ले जाओ। सड़क पार करने से पहले रुको और देखो।

"सिर्फ़ कहानी में" वाली मुहर बताती है कि कहानी में क्या होता है, सड़क पर नहीं।

निकलने से पहले अपनी साइकिल जाँचो

